RNI No.: UPHIN/2010/32733

ग्राम भारती

कृषि, ग्रामीण विकास, सहकारिता और पंचायती राज का पाक्षिक

लखनऊ, वर्ष 11, अंक 12, 01 अक्टूबर, 2020, पृष्ठ 36 मूल्य ₹ 20

गाँधी जयंती विशेषांक

2020

जय जवान - जय किसान

विमोचन स्वतंत्रता दिवस विशेषांक

ग्राम भारती के स्वतंत्रता दिवस विशेषांक का विमोचन करते हुए विधान परिषद् के सदस्य डॉ० जयपाल सिंह व्यस्त

अनुसूचित जाति प्राथमिक विद्यालय
मिश्रौलिया, जिला देवरिया

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयंती पर

हार्दिक शुभकामनाएं

श्रीमती शैल द्विवेदी
सहायक अध्यापिका

शिव दत्त दूबे
प्रधानाध्यापक

उ.प्र. समाचार सेवा
MEDIA Foundation
मीडिया फाउण्डेशन (पंजी.)
पंजीकृत पता: 3/11,आशीर्वाद कालोनी,कैसरबाग ,लखनऊ-226001 ,मो.9453272129

गतिविधियां
- न्यूज एजेंसी
- प्रकाशन
- वेब पोर्टल
- विचार गोष्ठी
- सम्मेलन

उत्तर प्रदेश समाचार सेवा
u.p.samachar sewa
News Agency Accredited by Deptt. of Information U.P

RNI No: UPHIN/2010/32733
ग्राम भारती
Gram Bharati

IRNA
UP Web News
UPSS उप्रससे

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती पर

शुभकामनाएं
प्रभा शंकर दूबे
जिला संवाददाता, दैनिक अमृत विचार
मिर्जापुर

ग्राम भारती

पाक्षिक

वर्ष 11, अंक 12

01 से 15 अक्टूबर, 2020

(प्रकाशन का ग्यारहवां वर्ष ,16 अप्रैल 2010 से प्रकाशित)

गांधी जयंती विशेषांक

RNI NO.: UPHIN/2010/32733

संपादक

सर्वेश कुमार सिंह

पृष्ठ 32, मूल्य 20 रूपये

संपादकीय कार्यालय

204, दूसरा तल, प्रिंस काम्पलेक्स

हजरतगंज, लखनऊ-226001

ग्राम भारती पाक्षिक के लिए स्मामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक सर्वेश कुमार सिंह द्वारा माडर्न प्रिन्टर्स, 10 घसियारी मण्डी, कैसरबाग,लखनऊ-226001, से मुद्रित एवं 103-117, प्रथम तल, प्रिंस काम्पलेक्स हजरतगंज, लखनऊ-226001 से प्रकाशित ।

फोनः 9453272129 , व्हाट्सएपः 9140624166

ई-मेलः grambhartilko@gmail.com

संपादकीय..... 02

लखनऊ का एक भाषा-एक 03

गांधी चिंतन और मानवा..... 05

गांधी का ल खनऊ से नाता..... 09

जय किसान के उद्घोषक 12

सीतापुर आये थे महात्मा 13

मिर्जापुर को आदर्श ब्लाक 17

आत्मनिर्भर होंगे भारत..... 19

वीरता और त्याग का 21

अहिंसा महात्मा गांधी..... 23

सत्याग्रह जिसने महात्मा. 26

मानव से महात्मा की यात्रा..... 29

खुद वो बदलाव बनिये जो..... 31

संपादकीय

राजनीति का प्रयोगधर्मी महात्मा

महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पूर्ण हो रही है। सम्पूर्ण देश कृतज्ञ भाव से उनके योगदान और बलिदान के प्रति नतमस्तक है। गांधी जी के देश के लिए योगदान को सिर्फ स्वतंत्रता तक सीमित करना न्यायोचित नहीं है। उनका योगदान व्यापक और सर्वसमाज के हित चिंतक के रूप में भी है। उन्होंने जितना बल देश को आजाद कराने पर दिया और उसके लिए समाज को 'अहिंसा का अस्त्र' देकर खड़ा किया, वहीं समाज की कुरीतियों पर भी सम-सामयिक तरीकों से प्रहार किया। गांधी जी ने एक अमूल्य और अद्भुत चिंतन दिया। इस चिंतन का आधार गांव, गरीब, किसान और ग्रामीण उद्योग में लिप्त समाज का अंतिम छोर पर बैठा व्यक्ति था। महात्मा गांधी देश में कल-कारखानों पर निर्भर होने की बजाय गांव के परंपरागत छोटे-छोटे धंधों को जीवंत रखने के पक्षधर थे। उन्होंने इन धंधों को संबल प्रदान करने के लिए ही 'खादी का मंत्र' दिया और उसका यंत्र बनाया 'चरखा'। यह चरखा बहुत मामूली सी वस्तु है, किन्तु इसका महत्व अत्यधिक व्यापक है। इसपर पूरी ग्रामीण अर्थव्यवस्था टिकी है। यह 'ग्रामीण स्वावलंबन' का आधार बना। इतना ही नहीं गांधी ने विचार के स्तर पर भी व्यक्तिगत जीवन की कटु सच्चाइयों को स्वीकार कर सुचिता का परिचय दिया। गांधी ने सादगी का संदेश दिया। वे अत्यधिक संपन्न परिवार में जन्मे थे। उच्च शिक्षित थे, वह्यभव और सुख सुविधाओं के साथ जीवन जी सकते थे। किन्तु, खान-पान से लेकर पहनावे तक उन्होंने एक संदेश दिया। यह संदेश था सादगी के साथ उच्च लक्ष्य के लिए समर्पित होने का। यही कारण हैं कि गांधी अतीत के अन्य महापुरुषों से स्वयं को अलग साबित करते हैं। गांधी 'प्रयोगधर्मी' थे। उन्होंने जीवन और सार्वजनिक मार्ग को एक प्रयोगशाला बनाया। गांधी ने अपने जीवन में कई प्रयोग किये, वहीं राजनैतिक लक्ष्य प्राप्ति के लिए भी प्रयोगों का सहारा लिया। यह गांधी ही थे, जिन्होंने एक धोती, चप्पल, लाठी और गोल चश्मे से अपनी अलग पहचान स्थापित कर दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। वहीं स्वतंत्रता के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भी कई प्रयोग किये। उनकी आन्दोलनात्मक प्रयोगशाला से ही 'असहयोग आन्दोलन', 'सत्याग्रह', 'करो या मरो' और 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' जह्यसे प्रयोग उपजे थे। इन प्रयोगों का सुफल सामने आया। शांति और अहिंसा के साथ राजनैतिक प्रतिरोध के लिए ये उदाहरण बने। इन उपायों को हम लोकतंत्र में असहमति व्यक्त करने के उपाय के रूप में एक धरोहर के रूप में देखते हैं। महापुरुषों की श्रंखला हमारे देश में बहुत लंबी है। अनेक महापुरुष इस धरती पर आये हैं और ईश्वर आगे भी उन्हें भेजेगा। लेकिन, किसी ने भी दुनिया को इतना अधिक प्रभावित नहीं किया जितना गांधी ने किया। खास बात यह भी है कि गांधी ने अपने जीते जी, उतनी ख्याति अर्जित नहीं की, जितनी कि उनके निधन के बाद उनके दर्शन ने प्राप्त की है। यही है गांधी की 'खासियत' जो उन्हें दूसरों से अगल करती है और महान बनाती है। फिर किसी गांधी के अवतरण की भारतवासी कामना करते रहेंगे।

लखनऊ का 'एक भाषा-एक लिपि' सम्मेलन और महात्मा गांधी

सर्वेश कुमार सिंह

भारत की स्वतंत्रता के लिए अहिंसा को अस्त्र बनाकर सशक्त आंदोलन खड़ा करने वाले महात्मा गांधी का राष्ट्र भाषा हिन्दी के लिए अतुलनीय योगदान है। उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान हिन्दी की शक्ति को पहचाना और उसके पक्ष में खुलकर सामने आये। गांधी जी ने देवनागरी लिपि की प्रबल पक्षधरता की। इसी के निमित्त वे लखनऊ के ऐतिहासिक 'एक लिपि सम्मेलन' में सम्मिलित हुए और इसकी अध्यक्षता की। यह सम्मेलन तत्कालीन संयुक्त प्रांत आगरा एण्ड अवध की राजधानी लखनऊ में 29 सितंबर 2016 को आयोजित हुआ था। इसका विषय था, 'भारतीय

एक-भाषा एक' । गांधी जी ने इस सम्मेलन की अध्यक्षता की थी।

एक लिपि सम्मेलन में महात्मा गांधी ने कहा, 'यदि राष्ट्रभाषा का प्रचार करना है तो इसके लिए भगीरथ प्रयास होने चाहिए, आप लोग लाट साहब या उनके दरबार में जो प्रार्थना पत्र भेजते हैं, वह किस भाषा में भेजते हैं ? यदि हिन्दी में नहीं भेजते तो हिन्दी में लिखकर भेजिए।' अब आप कहेंगे कि हिन्दी में लिखकर भेजने से वे हमारी बात नहीं सुनेंगे। पर मेरा कहना है कि आप अपनी भाषा में ही बोलें और अपनी ही भाषा में लिखें। उनकी मर्जी होगी तो वे हमारी बात सुनेंगे, पर मैं अपनी बात अपनी ही भाषा में कहूंगा, जिसकी गरज होगी वह सुनेगा। इस प्रतिज्ञा के साथ काम करने पर ही हिन्दी को महत्व मिलेगा।

महात्मा गांधी का हिन्दी के प्रति यह आग्रह ही आगे चलकर उनके आन्दोलन की आन्तरिक शक्ति बना। हिन्दी में उत्तर भारतीयों के साथ संवाद और उनके प्रति सहानुभूति ने ही उन्हें गांधी से महात्मा बनाया। गांधी जी को आन्दोलन को सफलता की परिणति तक पहुंचाने की यह शक्ति हिन्दी क्षेत्र ने ही दी थी।

लखनऊ के 'एक लिपि - एक भाषा' सम्मेलन का संदेश पूरे देश में गया। इसका प्रभाव यह हुआ कि गैर हिन्दी क्षेत्रों में हिन्दी के प्रति आग्रह बढ़ने लगा था। दक्षिण और सुदूर पूरब में ही हिन्दी के प्रचारक सक्रिय हुए। स्वतंत्रता मिलने के बाद हिन्दी को राष्ट्र भाषा माना गया, किन्तु अफरसशाही का वर्चस्व बढ़ने से यह वास्तविक अधिकार और स्वीकृति नहीं पा सकी। यही कारण है कि आज हिन्दी क्षेत्रों में भी अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ रहा है। लोग अंग्रेजी माध्यम से बच्चों को शिक्षा दिलाने का मोह नहीं छोड़ पा रहे हैं। लेकिन, हिन्दी के प्रति गांधी का संदेश आज भी प्रासंगिक है कि हमें अपनी बात अपनी मातृ भाषा में ही कहनी चाहिए, जिसकी गरज होगी वह सुनेगा। यह दृढ़ विश्वास ही हिन्दी को उन्नत शिखर पर पहुंचा सकता है।

सौ साल पहले, 15 अक्टूबर 1920 को लखनऊ में गांधी ने कहा

मिट्टी में मिल जाएगी ब्रिटिश हुकुमत

आज से सौ साल पहले महात्मा गांधी ने लखनऊ की भूमि पर ऐतिहासिक भाषण दिया था। इसमें उन्होंने भष्यिवाणी की थी कि ब्रिटिश हुकुमत मिट्टी में मिल जाएगी। महात्मा गांधी 15 अक्टूबर 1920 को लखनऊ में थे। उनकी एक एक सभा यहां आयोजित थी। इस सभा में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए श्री गांधी ने कहा कि ब्रिटिश हुकुमत इस समय 'शैतान' की प्रतिमूर्ति है। इस हुकुमत ने इतने घोर अत्याचार किये हैं कि यह भगवान और हिन्दुस्तान के आगे तौबा न करे तो मिट्टी में मिल जाएगी। मैं तो यहां तक कहूंगा उसे मिटाना हर भारतीय का कर्तव्य है।

उन्होंने कहा, सरकार की रंगरूटी में जाना, नरक में जाने के समान है। यह कहना अपराध हो तो अवश्य ही यह अपराध करके पवित्र बनना प्रत्येक भारतीय का फर्ज है। गुलामी में रहने से समुद्र में डूबना बेहतर है। यह सरकार डाकुओं से भी बुरी है। उसने हमारा सबकुछ छीन लिया है। इतना ही नहीं, वह तो हमारी आत्मा पर भी अधिकार करना चाहती है। हमें उससे इतना भर कह देना है कि जब तक हमारा वित्त मात्र ही नहीं, बल्कि हमारी इज्जत, हमारी आजादी वापस नहीं मिलती, तब तक तुमसे मुहब्बत रखना हराम है।

गांधी चिंतन और मानवाधिकार

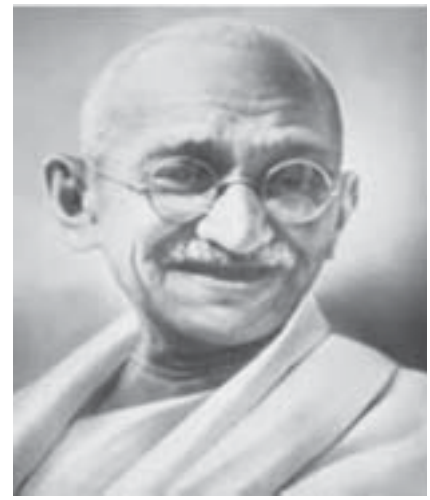

■ अंशू गुप्ता

अज्ञानता, अंधविश्वास से मुक्त, विवेकशील और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मानवता को अपनाने वाले तथा हिंसा परमो धर्मः की नीवं डालने वाले महात्मा गाँधी का चिन्तन और दर्शन शान्ति, बन्धुत्व, सहिष्णुता, विकास और एकता जैसे विचारों से अनुप्रमाणित था। गांधी जी के जितने भी सिद्धांत देश व विदेश में प्रतिपादित हुए, उन सब के मूल में संकल्प का ताना-बाना हुआ था। वे व्यक्ति की आंतरिक भावनाओं की एकाग्रता के सहारे सामाजिक संस्कृति की बुनियाद रखना चाहते थे तथा व्यक्तित्व के विकास में इसका महत्वपूर्ण अवदान भी समझने थे। वे सकारात्मक तथा रचनात्मक कार्यों के द्वारा देश के लोगों के अधिकार और कर्तव्य के लक्ष्य को प्राप्त करने की धुरी समझते थे। वे विचार-विमर्श, परस्पर विनिमय तथा वैज्ञानिक तानों-बानों के सहारे प्रगतिशील विश्व की रचना करना चाहते थे, जिसमें युवाओं की सकारात्मक सोच को विशेष महत्व देते थे। उनका मानना था कि हम सभी नियामक शक्ति की सत्ता के अंतर्गत निवास करते हैं । इसलिए हमें कभी उस अदृश्य

सत्ता के नजर अंदाज नहीं करना चाहिए। वे इंसानों द्वारा मयार्दाओं को लांघते हुए प्रकृति के साथ किये जाने वाले दुर्व्यवहार के घोर विरोधी थे। वे प्रकृति और मनुष्य के बीच ऐसा अभेध्य संबध स्थापित करना चाहते थे जो प्रकृति की साधना का मनुष्य की आंतरिक साधना के साथ एकात्म संबंध स्थापित करने में सफल हो सके।

गांधी जी का कहना था हिंसापूर्ण समाज में हम अहिंसा को सर्वोच्च मानवीय मूल्य के तौर पर स्वीकार करने की हिम्मत रखते हैं, तो हम उसमें अपने साथ-साथ दूसरों के लिए भी उसी मूल्य को स्थापित करने का प्रयास करते हैं। गांधी की अहिंसा पारम्परिक धार्मिक अहिंसा से भिन्न इस अर्थ में है कि वह किसी धार्मिक आदर्श और किसी धार्मिक मूल्य की अनुगामी नहीं है बल्कि वह तरह-तरह के धर्माचरणों की कसौटी पर स्वयं खड़ी दिखाई देती है। गाँधी जी के लिए अहिंसा केवल आदर्श नहीं है बल्कि बुनियादी जीवन मूल्य भी है। संयम और करुणा की व्याख्या करते हुए गाँधी जी ने लिखा है, संयम केवल दूसरे पर की जाने वाली कृपा नहीं है, बल्कि खुद की जीवन को जीने के लिए बुनियादी बोध है।

संसार का कोई भी ऐसा धर्म नहीं है, हिंसा का उपदेश देता हो या मार्ग बताता हो। विश्व में जितने भी चर-अचर प्राणी हैं, उन सबमें एक दूसरे के प्रति सहयोग, आपसी भाई चारा, परस्पर सदभाव, सर्वधर्म समभाव का तत्व विराजमान है। गांधीजी की आंतरिक साधना और दिनचर्या में भी मानव अधिकारों की साफ झलक दिखाई पडती है। अपनी दैनिक दिनचर्या में दूसरों के अधिकारों का हनन न हो, इसका उन्होंने हमेशा ध्यान किया, चाहे वो पूजा का समय हो, चाहे वो रात्रि में सोने का समय हो, चाहे वो साधना का समय हो, सब में वे इस बात का ध्यान रखते थे कि मेरे कारण किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत एंव समष्टिगत अधिकारों का कोई उल्लंघन न हो। वे कर्म पर आधारित विश्व की संरचना को देखना चाहते थे। उन्हें भारतीय वर्ण व्यवस्था उतनी ही प्रिय थी जितनी भारतीय कर्म व्यवस्था। वे दोनों के परस्पर सहयोग से एक ऐसे विश्व की नींव रखना चाहते थे जिसमें धर्म, कर्म, जाति, ऊंच-नीच, सब कुछ एक में समा जाएं और विश्व का अस्तित्व 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' एवं 'ईशावास्यंइदम, सर्वम जगन्या जगत' के सिद्धांत पर कायम रहे। गाँधी जी उपनिषद के इस मंत्र से बहुत ही प्रभावित थे और इसे वे सार्वभौम मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति का तथा ऋषियों की वाणी का अनोखा वरदान समझते थे। वे इसके घोर विरोधी थे कि ब्राह्मण के यहाँ पैदा हुआ बच्चा, पैदा होते ही कुलीन वशं का माना जाएगा। अपने आश्रम में भी इस भेद-भाव के प्रति उनका गुस्सा हमेशा फूटता रहता था और वे कभी-कभी आश्रम के लोगों को सख्त हिदायत देते रहते थे कि हमारे आश्रम में कोई भी व्यक्ति उंच-नीच की मानसिकता न रखे,

वे कर्म पर आधारित विश्व की संरचना को देखना चाहते थे। उन्हें भारतीय वर्ण व्यवस्था उतनी ही प्रिय थी जितनी भारतीय कर्म व्यवस्था। वे दोनों के परस्पर सहयोग से एक ऐसे विश्व की नींव रखना चाहते थे जिसमें धर्म, कर्म, जाति, ऊंच-नीच, सब कुछ एक में समा जाएं और विश्व का अस्तित्व 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' एवं 'ईशावास्यंइदम, सर्वम जगन्या जगत' के सिद्धांत पर कायम रहे।

परस्पर सद्भाव से रहें और सब में ईश्वर का वास देखें, क्योंकि उनके दर्शन में इंसानियत को खास महत्व दिया गया है। वे इंसानियत के चश्मे से सभी धर्मों के प्रमुख ग्रथों का पारायण करते थे। वे कहा करते थे कि सभी जाति के इंसानों के खून का रंग का ही होता है। यदि ईश्वर के द्वारा जाति को प्रधानता दी जाती तो वे उनके लहू के रंग को भी अलग-अलग बना देते । वे हमेशा कहा करते थे, चाहे हिन्दू का हो, चाहे मुस्लिम का हो, चाहे ईसाई का हो या सिख का हो, लहू का रंग एक ही होता है। इस सबंध में वे आश्रम वासियों को हमेशा उदाहरण देकर कहा करते थे कि जिस प्रकार कफन और हवन के धुन्धों के रगों को कोई अंतर नहीं होता है, उसी प्रकार इंसानियत के लहू के रंग में भी कोई अंतर नहीं होता है। उनका मानना था कि अँधेरा जितना घना होता है, दीपक उतना ही प्रासंगिक होता है। उनकी साधना वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धांत पर आधारित थी, और उनकी सोच एकम सद् विप्रा बहुदा वदन्ति पर आधारित थी।

वे सत्य के अवतार थे और अपने जीवन में वे सत्यमवद, धर्ममचर का अक्षरशः पालन करते थे और आश्रमवासियों को भी इसी सूत्र में बंधने की सीख देते थे। वे गीता के कर्म एवं ज्ञान योग के सिद्धांत के प्रबल समर्थक थे। वे केवल इसके समर्थक ही नहीं उसे अपने जीवन में ज्यों का त्यों अपनाते भी थे। वे विश्व के सभी धर्म ग्रथों में मानवीय संवेदना , मानवाधिकारों, मावनीय गरिमा के सूत्र को खोजते रहते थे।

वे मन, कर्म, वचन तीनों से एक थे वे कह सके कि मेरा जीवन ही मेरा संदेश है। उनका कहना था कि सत्य शाश्वत है। वे सत्य के अवतार थे और अपने जीवन में वे सत्यमवद, धर्ममचर का अक्षरशः पालन करते थे और आश्रमवासियों को भी इसी सूत्र में बंधने की सीख देते थे। वे गीता के कर्म एवं ज्ञान योग के सिद्धांत के प्रबल समर्थक थे। वे केवल इसके समर्थक ही नहीं उसे अपने जीवन में ज्यों का त्यों अपनाते भी थे। वे विश्व के सभी धर्म ग्रथों में मानवीय संवेदना , मानवाधिकारों, मावनीय गरिमा के सूत्र को खोजते रहते थे, और जो जहाँ जिस रूप में मिलता तथा उसे वे अपने जीवन में उतारने की कोशिश करते। इन सूत्रों पर संवाद और बहस भी खूब करते थे। वे उपनिषदों की विचारधारा से विशेष प्रभावित थे तथा उसे ज्ञान की गंगा मानते थे। गाँधी जी आदर्श एंव व्यवहार की शिक्षा के प्रति हमेशा सजग थे और वे कर्म की शिक्षा को सर्वोपरि महत्व देते थे। वे भारतीय चिन्तन धारा के उस मार्ग के अनुयायी थे, जिसमें ज्ञान, कर्म एवं भक्ति की त्रिवेणी बहती है। वह अनुभवजन्य ज्ञान की शलाका के ऐसे तीर्थोदक थे, जिसके स्पर्श मात्र से हो लोग प्रभावित हुए बिना नही रहते थे। उनकी वाणी में राष्ट्र भक्ति और जनकल्याण की अजस्त्र धारा निरंतर बहती थी।

गाँधी दर्शन से शांति और मानव अधिकार स्थापित होगा

उपरोक्त तत्थों के आलोक में यह बात स्पष्ट हो जाती है कि गाँधी-दर्शन के बिना शान्ति और मानव अधिकारों के संकल्पना बेमानी होगी क्योंकि गांधी जी ने जिस इंसानियत की बुनियादी अवधारणा का बीज बोया उसकी आधारशिला सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, शारीरिक श्रम, सादगी और

सत्याग्रह पर आधारित थी। सत्याग्रह की व्याख्या करते हुए, गांधीजी ने लिखा है सत्याग्रह का अर्थ है अपने घोर विपक्षी के सत्य में भी, उसकी संभावना में भी आस्था रखना। विश्व में यदि कहीं भी मानव अधिकारों की अवधारणा के संबंध विमर्श , बहस होगी तो उनमें गांधीजी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों का प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से जिक्र अवश्य होगा। यह सर्वंदित है कि गांधी जी का जीवन स्वयं अपने लिए नहीं था, बल्कि दूसरों के लिए समर्पित था। जिसका जीवन हमेशा दूसरों के लिए रहा हो, उससे अधिक परमार्थ व मानव अधिकार की बात करने वाला दूसरा कोई व्यक्ति हो नहीं हो सकता। उनके जीवन-दर्शन की मूल संकल्पना में व्यक्ति की गरिमा, प्रतिष्ठा और उसके सम्मान की बातें कूट-कूटकर कर भरी थीं। गाँधी जी मनुष्य के रूप में अग्रेजों से भी प्राणी होने के कारण प्रेम भाव रखते थे। उन्हें भारत में ही नहीं अपितु विश्व में शान्ति का अग्रदूत, दलितों का मसीहा तथा सेवाभाव को प्रेरित करने वाले जननायक के रूप में जाना जाता है। गाँधी जी मानते थे कि शरीर सेवा के लिए प्राप्त है और ह्रदय आत्म दर्शन के लिए। गाँधी जी ने अपने जीवन में केवल सत्य का प्रयोग ही नहीं किया बल्कि उसको जीया भी। उनका विचार था केवल सत्य बोलने से ही मनुष्य एवं विश्व का कल्याण नहीं होगा बल्कि अपनी अंतरात्मा में रखते हुए सत्य को जीने की कला लानी होगी। ज्ञान और कर्म की साधना करने वाले तथा गीता के दर्शन को पाने जीवन की बुनियाद बनाने वाले गाँधी की विचारधारा की जड़ में मानवाधिकारों की संकल्पना का बीज स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बत होता है। अहिंसा और सर्व-धर्मसमभाव की गांधी जी की अवधारणा मानव अधिकारों की आधार शिला है।

(स्रोतः साभार, विकासपीडिया)

महात्मा गांधी की लखनऊ यात्रा

26-30 दिसंबर 1916	: कांग्रेस अधिवेशन में शामिल हुए (राजनैतिक भाषण, प्रस्ताव) (गिरमिटिया समस्या पर प्रस्ताव, एक भाषा-एक लिपि सम्मेलन)
31 दिसंबर 1916	: मुस्लिम लीग सम्मेलन में हिन्दू-मुस्लिम एकता पर भाषण दिया
11 मार्च 1919	: सत्याग्रह पर भाषण
15 अक्टूबर 1920	: अंग्रेजों के बहिष्कार पर भाषण
26 फरवरी 1926	: खिलाफत सभा में भाषण
07 अगस्त 1921	: अमीरुद्दौला पार्क की सभा में भाषण
08 अगस्त 1921	: कठियाबाड़ के राजा महाराजाओं के नाम लखनऊ से अपील
17 अक्टूबर 1925	: दो सभाओं में भाषण
28 सितंबर 1929	: चिनहट में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का उद्घाटन
28 मार्च 1936	: ग्रामोद्योग प्रदर्शनी का उद्घाटन
12 अप्रैल 1936	: विविध कार्यक्रम
25 जुलाई 1939	: महिला सभा, बाल सभा तथा जन सभा में भाषण

महात्मा गांधी का लखनऊ से नाता

श्रीधर अग्निहोत्री

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं उ.प्र. समाचार सेवा के वरिष्ठ संवाददाता हैं)

दुनिया भर के लोग मोहनदास करमचंद गांधी को महात्मा गांधी के नाम से ही जानते हैं पर बहुत कम लोगो को पता होगा कि महात्मा गांधी को इस नाम से सर्वप्रथम लखनऊ में ही पहचान मिली। इसके पहले लोग उन्हे बैरिस्टर गांधी ही कहा करते थें। यह बात उस समय की है जब कांग्रेस का अधिवेशन लखनऊ में हुआ था, 1916 में हुए इस अधिवेशन की अध्यक्षता कांग्रेस के नेता अंबिका चरण मजूमदार ने की थी।

महात्मा गांधी का लखनऊ आना कई बार हुआ। यह भी एक संयोग हह्य कि देष के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू और गांधी जी पहली मुलाकात लखनऊ के चारबाग रेलवे स्टेशन पर हुई थी। वह्यसे बापू पहली बार लखनऊ कांग्रेस के अधिवेशन में ही आए थे। 26 दिसंबर 1916 को चारबाग स्टेशन पर गांधी जी ने नेहरू के साथ ही सभा को संबोधित किया था। मार्च 1936 में जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने के लिए गांधी दूसरी बार फिर यहा आए थे।

महात्मा गांधी का लखनऊ आना कई बार हुआ। यह भी एक संयोग है कि देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू और गांधी जी की पहली मुलाकात लखनऊ के चारबाग रेलवे स्टेशन पर हुई थी। वैसे बापू पहली बार

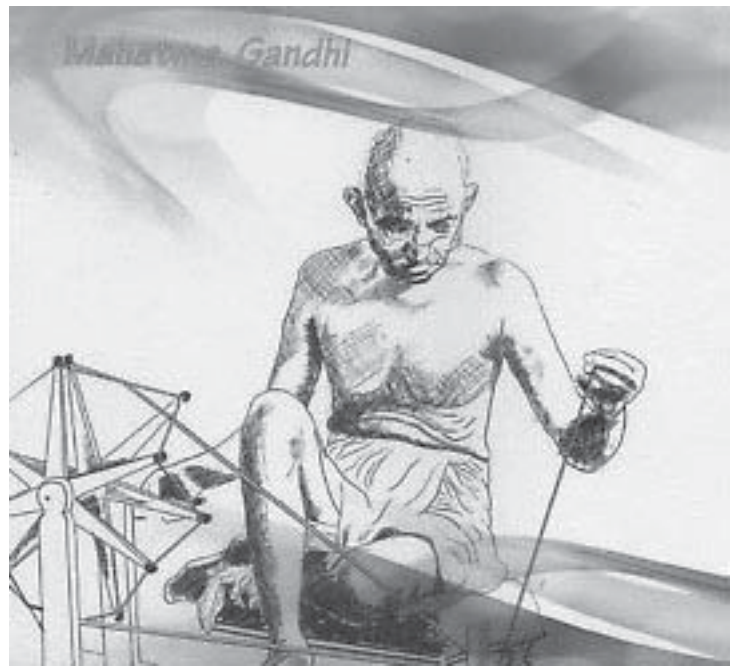

लखनऊ कांग्रेस के अधिवेशन में ही आए थे, 26 दिसंबर 1916 को चारबाग स्टेशन पर गांधी जी ने नेहरू के साथ ही सभा को संबोधित किया था। मार्च 1936 में जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने के लिए गांधी दूसरी बार फिर यहां आए थे।

इसी अधिवेशन में कांग्रेस के कई बडे नेताओं की मुलाकात एक दूसरे से हुई थी। फिर इसके बाद गांधी जी का लखनऊ आना जाना होता रहा। इतना ही नहीं वर्ष 1916 से 1939 के बीच कई बार अपने लखनऊ प्रवास के दौरान गांधी जी ने यहां का दौरा किया। स्वतंत्रता आंदोलन के लिए लोगों को जागरुक करने के लिए गांधी जी 11 मार्च 1919, 15 अक्टूबर 1920, 26 फरवरी 1921, 8 अगस्त 1921, 17 अक्टूबर 1925, 27 अक्टूबर 1929 को भी लखनऊ आए। गांधी जी जब भी यूपी के दौरे पर आते थे तो लखनऊ जरूर आते थे। इसके बाद यहीं से अन्य जिलों में प्रवास के लिए जाया करते थे।

महात्मा गांधी कई बार लखनऊ आए और ज्यादातर यात्राओं के दौरान कई-कई दिनों तक यहां प्रवास किया। लखनऊ में कांग्रेस का सम्मेलन, लखनऊ पैक्ट, एक-भाषा एक लिपि सम्मेलन, सत्याग्रह समर्थकों की सभा- ऐसे ही कई महत्वपूर्ण आयोजन रहे जिनमें राष्ट्रपिता की भागीदारी रही। लखनऊ में सात अगस्त को राजधानी के अमीरुद्दौला पार्क में उनकी ऐतहासिक जनसभा हिन्दू मुस्लिम एकता की आज भी एक मिशाल है। कांग्रेस के लखनऊ में हुए अधिवेशन में महात्मा गांधी ने गिरमिटिया मजदूरों को लेकर एक प्रस्ताव रखा। जिसे सर्वसम्मति से स्वीकारा गया। इसके अलावा कई अन्य महत्वपूर्ण प्रस्तावों को भी महात्मा गांधी की उपस्थिति में पारित किया गया। लखनऊ में सचिवालय का एक भवन बापू भवन के नाम से जाना जाता है। बापू भवन, गांधी भवन सहित नगर में विविध स्थलों पर गांधी की प्रतिमा है। महात्मा गांधी मार्ग, गांधी के नाम पर कई पार्क बार-बार उनकी याद दिलाते हैं। पिछले साल ही यूपी विधानसभा का ऐतहासिक सत्र महात्मा गांधी के इसी लखनऊ से जुडाव के चलते अनवरत 36 घंटे तक चला। महात्मा गांधी की 150 वीं जयन्ती को यादगार बनाने के लिए यूपी सरकार ने विधानसभा की कार्यवाही लगातार 36 घंटे तक चलवाने का काम किया। सुबह 11 बजे से शुरु विधानसभा का विशेष सत्र 36 घंटे लागातार चलता रहा। ये एक विशेष अवसर था जब पूरे विश्व के लोगों ने उत्तर प्रदेश विधानसभा

यूपी विधानसभा का ऐतहासिक सत्र महात्मा गांधी के इसी लखनऊ से जुडाव के चलते अनवरत 36 घंटे तक चला। महात्मा गांधी की 150 वीं जयन्ती को यादगार बनाने के लिए विधानसभा की कार्यवाही लगातार 36 घंटे तक चलवाने का काम किया। सुबह 11 बजे से शुरू विधानसभा का विशेष सत्र 36 घंटे लागातार चलता रहा। ये एक विशेष अवसर था जब पूरे विष्व के लोगों ने उत्तर प्रदेश विधानसभा के 36 घंटे चलने वाले सत्र को देखा।

के 36 घंटे चलने वाले सत्र को देखा। लखनऊ में बापू से जुड़े पत्रों, चित्रों एवं अन्य वस्तुओं का संग्रह गांधी भवन में है। जहां पुस्तकालय, वाचनालय, सभागार है और नियमित आयोजन होते रहते हैं। राजधानी के हुसैनगंज स्थित चुटकी भंडार गर्ल्स इण्टर कॉलेज की स्थापना भी महात्मा गांधी के सत्याग्रह आंदोलन से ही प्रभावित होकर की गई थी। सत्याग्रहियों के लिए घरों में प्रतिदिन चुटकी भर आटा एकत्र करने का एक आंदोलन चलाया गया था। इसी धनराशि के एक हिस्से से विद्यालय की स्थापना कर दी गई।

एक खास बात और कि महात्मा गांधी हिन्दू मुस्लिम एकता का सबसे बड़ा केन्द्र लखनऊ को ही मानते थें। इसलिए देश में जब भी उन्हे हिन्दू मुस्लिम एकता प्रदर्शन करना होता था तो वह लखनऊ ही आया करते थे। राजधानी लखनऊ के फरंगी महल से उनका गहरा नाता था। यह सिलसिला 1921 में तब शुरु हुआ, जब मोहम्मद अली जौहर का टेलिग्राम मौलाना अब्दुल बारी फरंगी महली को मिला। मौलाना बारी का इंतकाल होने तक बापू तीन बार लखनऊ आए और हर बार फरंगी महल में ही रुके।

जय किसान के उद्घोषक शास्त्री जी

स्वतंत्र भारत के इतिहास में दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का नाम अत्यधिक आदर और श्रद्धा भाव से लिया जाता है। उन्हें कद में छोटे किन्तु दृढ़ संकल्पित और कठोर फैसले लेने वाले प्रधानमंत्री के रूप में याद किया जाता है। शास्त्री जी ने 1965 के युद्ध में जिस तरह से पाकिस्तान को रण में धूल चटा कर दूसरी बार पराजित कर उसका दंभ तोड़ा था, वह स्वर्णिम अक्षरों में लिखा गया है। यद्यपि शास्त्री का कार्यकाल काफी चुनौतियों भरा रहा। अन्न की कमी और अनाज मूल्यों की वृद्धि को लेकर उन्हें कई मोर्चों पर संघर्ष करना पड़ा। एक तरफ सीमा पर शत्रुओं को पराजित करने की चुनौती दूसरी और अन्न उत्पादन बढ़ाने तथा देश की जनता का पेट भरने की चुनौती उनके सामने थी। उन्होंने इन दोनों चुनौतियों का एक साथ सफलतापूर्वक सामना किया। उन्होंने इसी समय नारा दिया- 'जय जवान-जय किसान'। इस नारे में यह शक्ति थी कि देश के जवानों ने सीमा पर और किसानों ने देश के भीतर लक्ष्यों को प्राप्त किया।

सादा जीवन : लाल बहादुर शास्त्री की जीवन अत्यधिक सादगी भरा था। वे एक सामान्य परिवार में जन्मे थे। बचपन में ही मुसीबतों का पहाड़ उनके परिवार पर टूट गया था। जब उनके शिक्षक पिता का साया उठ गया था। उनकी माता ने अपने मायके में रहकर उनकी शिक्षा दीक्षा पूरी की। शास्त्री जी ने वाराणसी के काशी विद्या पीठ से शास्त्री की उपाधि ली और इसके बाद ही अपने जाति सूचक उपनाम श्रीवास्तव को हटाकर शास्त्री लिखना शुरु कर दिया। इसके बाद जीवन भर उन्हें शास्त्री के रूप में ही पहचाना गया। भारत के गृह मंत्री और बाद में प्रधानमंत्री रहते हुए भी उन्होंने सादगी नहीं छोड़ी। सदैव अपनी माटी और संस्कृति से जुड़े रहे। शास्त्री जी ने केवल सादगी को अपने जीवन का अंग बनाया, बल्कि अपने पूरे परिवार पर यही संस्कार डाला। वे पूरी तरह से भारतीयता की प्रतिमूर्ति थे।

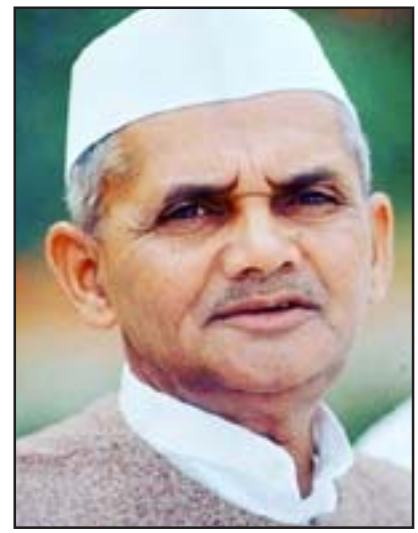

(02 अक्टूबर 1904-11 जनवरी 1966)

विजयी शास्त्री जी: शास्त्री जी के प्रधानमंत्री रहते 1965 में पाकिस्तान के साथ दूसरा युद्ध हुआ। छद्म रूप से किये गए आक्रमण का भारत ने करारा जबाव दिया। इस युद्ध में पाकिस्तान को भारी क्षति उठानी पड़ी। इसके बाद उसे संधि करने पर मजबूर होना पड़ा। इस संधि के लिए ही वे सोवियत संघ गए थे। जहां 1966 में ताशकंद में उनका रहस्यमय परिस्थिति में निधन हो गया। शास्त्री का निधन भारत के लिए अपूर्णीय क्षति थी। उनके निधन से भारत ने एक अनन्त संभावनाओं का राजनेता खो दिया। शास्त्री जी ने भारत को आत्मनिर्भर बनाने का पहली बार मंत्र दिया था।

वरिष्ठ नेता रामलाल राही के संस्मरण

आजादी के दीवानों में जोश जगाने

सीतापुर आये थे महात्मा गांधी

■आलोक कुमार वाजपेयी

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं उ.प्र.समाचार सेवा के सीतापुर में संवाददाता हैं)

महात्म: गांधी के सीतापुर से जुड़े कई संस्मरण हैं। पत्रकार आलोक कुमार वाजपेयी ने गांधी जे सीतापुर आगमन और उनकी यहां गतिविधियों के संबंध में वरिष्ठ कांग्रेस नेता रामलाल राही से उनके संस्मरण जाने तथा उन्हें लिपिबद्ध किया। प्रस्तुत है बातचीत पर आधारित आलेखः

सीतापुर का जंगे आजादी में गौरवमयी स्थान रहा है। जहॉ खैराबाद कस्बावासी लाला हरी प्रसाद और अल्लामा फजलेहक खैराबादी जैसे अनेकानेक स्वाधीनता के जीवन में ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ फेकने के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करने में भी पीछे नहीं रहे। समाजवादी चिन्तक आचार्य नरेन्द्र देव का जन्म स्थान कहे जाने वाले सीतापुर नगर में सत्य, अहिंसा और विश्व बन्धुत्व का संदेश देने वाले मोहनदास करमचंद गांधी 17 और18 अक्टूबर 1925 को आजादी की अलख जगाने व स्वाधीनता के पक्षधर लोगों में जोश भरने के लिए लखनऊ से सड़क मार्ग से अटरिया, सिंधौली आदि स्थानों से होते हुए शाम को पहुॅचे थे। यहॉ सीतापुर नगरपालिका द्वारा लालबाग में अभिनन्दन-पत्र लिया, तत्पश्चात उसी रात्रि हिन्दू महासभा व वैद्यसभा में भी उन्हें मानपत्र भेंट किए गये।

गांधीवादी चिन्तक एवं पूर्व केन्द्रीय उप गृह राज्यमंत्री राम लाल राही ने गांधी जी द्वारा सीतापुर कार्यक्रमों में दिए गये विचारों को उदधृत करते हुए बताया कि तत्कालीन नगरपालिका अध्यक्ष शम्भूनाथ टण्डन ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को अभिनन्दन-पत्र भेंट कर स्वागत किया, तत्पश्चात पूज्य बापू ने नगरपालिका सदस्यों को सम्बोधित करते हुए, इस बात पर नाराजगी प्रकट की कि उनके स्वागत में नगरपालिका का एक रुपया खर्च क्यों किया गया। यह एक रूपया जनहित के कामों में खर्च किया जाता तो नगरवासी लाभान्वित होते। महात्मा गांधी ने कहा अगर में सीतापुर

नगरपालिका का सदस्य होता तो इस काम के लिए एक पैसा स्वीकृत न करता। उन्होंने कहा कि में कांग्रेसियों के अपने देश के भाइयों की सेवा करने के लिए नगरपालिका और जिला बोर्ड के प्रवेश करने के खिलाफ नहीं हूँ। लेकिन अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए और स्वार्थपूर्ण उददेश्यों से किसी को इन स्थानीय संस्थाओं का सदस्य बनने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। सेवा और आत्मत्याग की सच्ची भावना के बिना नगरपालिका में प्रवेश बेकार है। मुझे नगरपालिका का एक मात्र आदर्श यहीं मालूम है, कि नगर को साफ-सुथरा और रोगों से मुक्त रखा जाय, गरीबों की मदद की जाय और उनके हलकों को गन्दगी से दूर रखा जाय तथा ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी जाय जिससे गन्दी बस्तियों में पनप ही न सकें। आर्थिक तंगी की आड़ नही लेनी चाहिए। अगर पैसा न हो तो नगरपालिका के सदस्यों को अपने हाथ से काम करने के लिए तैयार रहना चाहिए। इस प्रकार वे ऐसा उदाहरण पेश करेंगे, जिसका सभी अनुकरण करेंगे और नगरपालिका के कार्याकलापों की प्रगति के मार्ग की सारी कठिनाइयॉ निश्चित रूप से दूर हो जायेंगी। राष्ट्रपिता बापू हिन्दू सभा तथा वैद्यसभा में पहुँचे अभिनन्दन-पत्र दिए गए। महात्मा गांधी ने अभिनन्दन-पत्रों के उत्तर में कहा इन दोनों सभाओं द्वारा अभिन्नदन-पत्र पाने के योग्य नहीं हूँ, क्योंकि इनका मैं आलोचक रहा हूँ। इन पर टीका-टिप्पणी के सिवाय मैंने कुछ नहीं किया है। लेकिन मैं यह कह सकता हूँ, कि मैंने इनकी आलोचना सच्चाई के साथ और सहानुभूतिपूर्वक एक मित्र तथा हितैषी के नाते की। उनको मद्द पहुँचाने की इच्छा से की है। हिन्दू सभा की सच्ची सेवा करने के लिए सच्चा हिन्दू होना जरूरी है। हिन्दू धर्म सनातन धर्म है। मैं वेदों तथा धर्म को अनादि मानता हूँ। सत्य भी अनादि है, इसलिए मुझे हिन्दू धर्म और सत्य में कोई अन्तर नहीं दिखाई देता है, जो असत्य है, उसका हिन्दू धर्म से सम्बन्ध नहीं हो सकता, मैं किसी भी दशा में सत्य का त्याग नहीं कर सकता। चाहे कितना भी विरोध हो, चाहे मेरे खिलाफ हजारों लोग तलवारें उठा कर खडे.हो जावें। सत्य और अहिंसा में कोई अंतर नहीं। एक हिन्दू के रूप में द्वेशभाव को पनपने नहीं दे सकता। यदि मेरा कोई शत्रु भी है, तो मैं प्यार से जीतूंगा। अगर हिन्दू लोग अपने धर्म को आगे बढ़ाना चाहते हैं और उसकी सेवा करने के इच्छुक हों तो उसका सबसे अच्छा तरीका यह है कि वे अहिंसा के मार्ग पर चलें। अपने धर्म का पुनरूद्धार करने के लिए अवश्य कार्य करें, किन्तु अपने मुसलमान भाइयों के प्रति उनके हृदय में तनिक भी दुर्भावना नहीं होनी चाहिए। कुछ लोगों का ऐसा विचार है कि मैं अहिंसा के नाम पर कायरता का प्रचार कर रहा हूँ। यह बिल्कुल गलत है। बेतिया के हिन्दुओं ने मुझे गलत समझा। यदि वे अपनी मॉ-

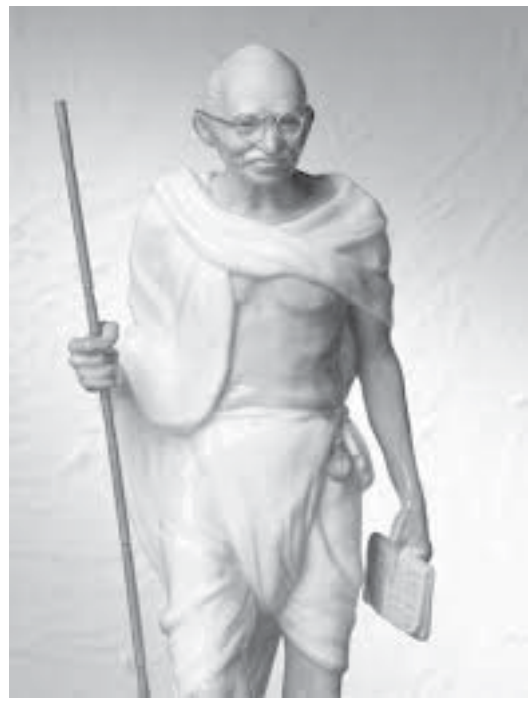

बहिन की इज्जत के लिए लड़ते हुए मर जाते हैं, तो मैं इसे अच्छा समझूँगा। और यदि ऐसा मौका आने पर वे भाग खड़े होते हैं तो यह निरी कायरता ही होगी। और इससे अधिक लज्जाजनक बात और कुछ नहीं हो सकती। हिंसा का मुकाबला अहिंसा से करना तो अच्छी चीज है, लेकिन कायरता अच्छी चीज नहीं है। सच्ची अहिंसा के लिए सच्ची बहादुरी की जरूरत होती है। हिन्दू संगठन के लिए चरित्र-निर्माण सबसे ज्यादा जरूरी है। जब तक यह नहीं होता और जब तक हर हिन्दू सत्य और सच्चरित्रता पर आरूढ़ नहीं होता, तब तक सच्चा संगठन असम्भव है। उस हालत में हिन्दू धर्म कहीं का नही रह जाएगा। वैद्य सभा के मान पत्र का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि अखबारों में और सभा-मंचों से उन बातों के लिए मेरी तीव्र आलोचना की गई है, जो मैंने वैद्यों के बारे में कही हैं। लेकिन मेरा अब भी वहीं विचार है। मैं अपनी बात वापस नहीं ले रहा हूँ और न यह मानता हूँ कि उसका एक भी शब्द अनुचित है। मुझे लगता है कि लोगों ने मुझे गलत समझा है। मैंने जो टीका-टिप्पणी की, वह आज के वैद्यों को लक्ष्य करके की है, न कि उस आयुर्वेदिक प्रणाली को लक्ष्य करके, जिसकी वे लोग सेवा कर रहे हैं। मैं खुद इस

हिंसा का मुकाबला अहिंसा से करना तो अच्छी चीज है, लेकिन कायरता अच्छी चीज नहीं है। सच्ची अहिंसा के लिए सच्ची बहादुरी की जरूरत होती है। हिन्दू संगठन के लिए चरित्र-निर्माण सबसे ज्यादा जरूरी है। जब तक यह नहीं होता और जब तक हर हिन्दू सत्य और सच्चरित्रता पर आरूढ़ नहीं होता, तब तक सच्चा संगठन असम्भव है। उस हालत में हिन्दू धर्म कहीं का नही रह जाएगा।

प्रणाली के खिलाफ नहीं हूँ। लेकिन उनका आत्म-सन्तोषी रुख मुझे पसन्द नहीं है और न वे तरीके ही मुझे पसन्द हैं जिन पर वैद्यगण चल रहे हैं। मैंने उनकी आलोचना इसलिए की है कि उन्होंने आयुर्वेद को नहीं समझा है और उसके साथ न्याय नहीं किया है। मैंने आयुर्वेद की प्रगति के लिए अपनी तरफ से भरपूर कोशिश की है और वैद्यों की जितने तरीकों से सहायता हो सकती है, करने का प्रयत्न किया है, लेकिन उनका काम देखकर निराशा होती है। वैद्यों को आगे बढ़ना चाहिए। यह सोचना गलत है कि उन्हें पश्चिम से कुछ भी नहीं सीखना है। यद्यपि मैंने आत्मा की उपेक्षा के लिए पश्चिमी दुनिया की भर्त्सना की है, फिर भी उसने कई क्षेत्रों में जो कर दिखाया है, उसके प्रति मेरी ऑख बन्द नहीं है। वैद्यों को पश्चिम से जरूरी बातें सीख कर अपने ज्ञान को पूरा करने के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्हें ऐसा मानकर निश्चिन्त नहीं बैठना चाहिए कि उनकी चिकित्सा-प्रणाली में जो कुछ है, उससे आगे चिकित्सा-शास्त्र में कुछ है ही नहीं। उन्हें जागरूक और क्रियाशील रहना चाहिए और उनका लक्ष्य प्रगति होना चाहिए। दूसरे दिन 18 अक्टूबर को संयुक्त प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन जो लालबाग में ही हुआ जिसकी अध्यक्षता उस समय के ख्यातिनाम

विद्वान नेता समाजसेवी जनाब सौकत अली द्वारा की गई। इस सम्मेलन में जनाब मोहम्मद अली, पं. मोती लाल नेहरु, डा. सैयद मसूद, जवाहर लाल नेहरू आदि सम्मिलित रहे। यहां पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने मुख्य रूप से गरीबों के लिए चरखा ग्रहण करने को और इसी के माध्यम से गरीबों की गरीबी को दूर करने के उद्देश्य को समझाया। उन्होंने सम्मेलन में ही अटरिया में मिले लोगों और चरखाअपनाये जाने के संदर्भ को भी इस सम्मेलन में उल्लेख किया। उन्होंने इस सम्मेलन में अपना भाषण समाप्त करते हुए हिन्दुओं से अनुरोध किया कि वे हिन्दू धर्म से अस्पृश्यता के महाकलंक को दूर करें।

श्री राही के अनुसार महात्मा गांधी ने उसी दिन उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन में अभिनन्दन-पत्र प्राप्त कर कहा कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है। मुझे इस बात से बड़ी प्रसन्नता है कि मद्रास में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के लिए काम किया जा रहा है, लेकिन खेद है कि बंगाल और अन्य स्थानों में कोई काम नहीं किया जा रहा है। तत्पष्चात सीतापुर के अस्पृश्यता विरोधी सम्मेलन में भाग लेने पहुँचे। सम्मेलन में गांधी जी ने कहा कि मैं स्वर्गीय गोखले के कथन से पूरी तरह सहमत हूँ कि भारतीय अपने कुछ देशवासियों को अस्पृश्य मानकर स्वयं सारी दुनियाँ में अस्पृश्य हो गये हैं। मैं स्वामी श्रद्धानन्द के इस सुझाव को भी ठीक मानता हूँ कि अस्पृश्यता को दूर करने का व्यावहारिक मार्ग यही है कि हरएक उच्च वर्ण हिन्दू घर-परिवार में तथाकथित अस्पृश्य व्यक्ति को रक्खे। मेरा निश्चित विश्वास है कि हिन्दू धर्म में अस्पृश्यता के लिए कोई स्थान नहीं है। किसी भी मानव के प्रति अस्पृश्यता का व्यवहार करना पाप है। अतः तथाकथित उच्च जाति के लोगों को अस्पृश्यों के बजाय स्वयं अपनी ही शुद्धि करनी चाहिए। उन्होंने अछूतों से भी अनुरोध किया कि वे अपने को शारीरिक रूप से और नैतिक दृष्टि से भी स्वच्छ रखें एवं चरखे को अपनाएं और खद्दर खरीद-पहन कर उसे बढ़ावा दें। श्री राही जी ने कहा कि देश में अनेकों जगह और उत्तर प्रदेश राज्य में भी साप्रदायिक हिंसा और विवाद होते रहे हैं। परन्तु हमारे नगर सीतापुर जनपद सीतापुर में गांधी दर्शन के अनुसार उनकी वाणी का आज भी असर है, जिसके कारण हिन्दू-मुस्लिम एकता और सर्व-धर्म सम्भाव विद्यमान है। साम्प्रदायिक दंगों और तनावों से हमारा जनपद लगभग मुक्त रहा है। करो या मरो का नारा देने वाले अहिंसावादी महात्मा गांधी के विषय में यह भी कहना अतिश्योक्ति न होगी, दुनिया में बहुत से लोग पैदा हुए जिन्होंने ईश्वरत्व का स्थान पाया, वंदनीय और पूज्यनीय हैं, उनमें महात्मा बुद्ध को छोड़ कर कोई भी भारतीय भू-खण्ड का ईश्वरत्व का दर्जा पाये ऐसा नही है, जिसने अपने जीवनकाल में हिंसा के रास्ते अपने वर्चस्व को न स्थापित किया हो, व्यौरे में जाने की जरूरत नहीं। परन्तु राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने सत्य और अहिंसा के बल पर न केवल मानव जाति के अधिकांश लोगों को एक सूत्र में बांधा अपितु इतने बड़े सत्ता संघर्ष में अपनी कार्यशैली से हिंसा का कोई कृत्य नहीं होने दिया न किसी को हिंसा करने का संदेश व आदेश दिया ऐसी महान ईश्वरत्व रूपी इंसानियत और इमानियत को हम शत-शत नमन करते है।

मेरा निश्चित विश्वास है कि हिन्दू धर्म में अस्पृश्यता के लिए कोई स्थान नहीं है। किसी भी मानव के प्रति अस्पृश्यता का व्यवहार करना पाप है। अतः तथाकथित उच्च जाति के लोगों को अस्पृश्यों के बजाय स्वयं अपनी ही शुद्धि करनी चाहिए।

मिर्जापुर को आदर्श ब्लाक बनाना ही लक्ष्यः बलवंत यादव

*आजमग़ढ़ जनपद के युवा ब्लाक प्रमुख **बलवंत यादव** की सक्रियता की पूरे जनपद में सराहना होती है। वे सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन के प्रति अत्यधिक सजग हैं। गांधी जयंती के अवसर पर उ.प्र.समाचार सेवा और ग्राम भारती के प्रतिनिधि **एस.पी.तिवारी** ने उनसे ब्लाक के लिए किये गए विकास कार्यों तथा क्षेत्र की समस्याओं पर विस्तार से बातचीत की। यहां प्रस्तुत हैं बातचीत के प्रमुख अंशः*

प्रश्नः कोविड-19 के समय आपने अपने ब्लॉक में क्या-क्या कार्य कराए, जिससे आपके ब्लॉक की जनता सुरक्षित रहें?

उत्तरः मैंने सभी ग्राम पंचायतों में मास्क वितरण, सैनीटाइजेशन की व्यवस्था करायी। हमारे ब्लॉक के अधिकारी जा जाकर लोगों को जागरुक करते हैं। ब्लॉक की जनता ने हमें हमेशा प्यार दिया।

प्रश्नः आपके ब्लॉक में जो प्रवासी मजदूर आए हैं उनके लिए आपने क्या व्यवस्था की?

उत्तरः हमारे ब्लॉक में जो प्रवासी मजदूर आए हुए हैं सबको सरकार के निर्देशानुसार मनरेगा के तहत काम दिया जा रहा है। उनकी अन्य सभी सुविधाओं के लिए हम लोग सतत प्रयासरत रहते हैं।

प्रश्नः आपके ब्लॉक में खड़ंजा, नाली की क्या व्यवस्था है। गांवों के भीतरी मार्गों पर क्या-क्या कार्य कराए गए हैं?

उत्तरः मैंने अधिकतर ग्राम पंचायतों को खड़ंजा और नालियों से जुड़वाया है, पुलिया का निर्माण कराया। सरकार के गाइडलाइन का पालन करते हुए पात्रों को आवास दिया गया। कई गांव में हैंडपंप और सोलर लाइट लगवाए गए हैं।

प्रश्नः ब्लाक में विकास के लिए भविष्य की क्या योजनाएं हैं?

उत्तरः समय आने पर सरकार के निर्देशों का पालन करते हुए उसकी योजनाओं को पूर्णरूपेण लागू करेंगे और ब्लॉक का संपूर्ण विकास किया जाएगा। मैं इस ब्लॉक को प्रदेश का एक आदर्श ब्लॉक बनाना चाहता हूं।

(एस.पी.तिवारी, उ.प्र. समाचार सेवा के मान्यता प्राप्त आजमगढ़ जिला संवाददाता हैं।)

गांव की खुशहाली से ही देश खुशहाल होगा : डा. जयपाल सिंह व्यस्त

मुरादाबाद में हुआ ग्राम भारती के स्वतंत्रता दिवस विशेषांक का विमोचन

मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के अधिष्ठाता मंडल के सदस्य और वरिष्ठ भाजपा नेता डा. जयपाल सिंह व्यस्त ने कहा है कि गांव की समृद्धि से ही देश समृद्ध होगा। भारत की आत्मा गांव में बसती है। गांव का हर निवासी किसान, खेतिहर मजदूर जब खुशहाल हो जाएगा तो देश उन्नत होगा। डा. व्यस्त ने यह विचार 10 सितंबर को अपने आवास पर ग्राम भारती के स्वतंत्रता दिवस विशेषांक के विमोचन अवसर पर व्यक्त किये।

कार्यक्रम में विधान परिषद् सदस्य श्री व्यस्त ने कहा कि यह देश ग्रामों में बसता है। ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत और गांव से जुड़ी से हुई किसानों की, मजदूरों की जितनी भी समस्याएं हैं, उन सभी के समाधान के प्रयास का माध्यम है यह पाक्षिक समाचार पत्र ग्राम भारती। हम ग्राम देवता का सम्मान करते हैं, आदर करते हैं। देश तभी खुशहाल होगा, जब किसान, मजदूर, गांव में निवास करने वाला हर व्यक्ति खुशहाल होगा। हमारी खेती, हमारा पशुधन तथा जो अन्य भी धन है वह तभी सुरक्षित रहेगा, निरंतर आगे बढ़ेगा जब किसान की समृद्धि होगी। हमारे किसान और गांव की समृद्धि ही देश की समृद्धि है। वरिष्ठ पत्रकार सर्वेश कुमार सिंह द्वारा ग्रामीण पत्रकारिता और गांव के लिए किया जा रहा यह कार्य प्रशंसनीय है, सराहनीय है। गांव के लिए प्रकाशित हो रहा यह पाक्षिक निरंतर प्रकाशित होता रहे, सभी पाठकों को लाभान्वित करता रहे। इसके लिए ग्राम भारती को शुभकामनाएं।

इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार और मुरादाबाद प्रेस क्लब के पूर्व सचिव अखिलेश शर्मा ने कहा कि ग्राम भारती गांवों की खबरों को मीडिया में लाने के लिए एक मिशन की तरह काम कर रहा है। कृषि की उन्नति के लिए ग्राम भारती द्वारा किया जा रहा कार्य सराहनीय है। ग्राम भारती के संपादक सर्वेश कुमार सिंह ने ग्राम भारती के बारे जानकारी देते हुए बताया कि समाचार पत्र पूरी तरह से गांव, किसान, कृषि, सहकारिता और पंचायतों को समर्पित है। बगैर किसी राजनीतिक समर्थन या विरोध के यह समाचार पत्र सिर्फ और सिर्फ गांव, किसान और खेती की समस्याओं को देश के सामने उजागर करता है। उनकी आवाज को स्वर देता है। श्री सिंह ने बताया कि समाचार पत्र का प्रकाशन बगैर किसी सरकारी सहयोग या अनुदान के किया जा रहा है। इसमें समाज का योगदान सराहनीय है। विमोचन के मौके पर वरिष्ठ पत्रकार और गणमान्य नागरिक मौजूद थे।

प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना

आत्मनिर्भर होंगे मत्स्य पालक

कौशलेन्द्र गिरि

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार, उत्तर प्रदेश समाचार सेवा एवं ग्राम भारती के जौनपुर में संवाददाता हैं)

भारत सरकार द्वारा मत्स्य उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाये जाने हेतु 'ब्लू रिवोल्यूशनः इन्टीग्रेटेड डेवलपमेन्ट एण्ड मैनेजमेंट ऑफ फिशरीज' योजना के स्थान पर 20 मई 2020 से एक नई केन्द्रीय योजना 'प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना' (पीएमएमएसवाई) को लागू किया गया है। जिसमें केन्द्र पुरोनिधानित योजनाएं तथा केन्द्र पोषित योजनाएं समाहित हैं। यह योजना 5 वर्ष तक अर्थात प्रदेश में वर्ष 2020 से वर्ष 2025 तक क्रियान्वित की जायेगी। 'प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना' को प्रदेश में लागू किये जाने व उसके क्रियान्वयन हेतु दिशा-निर्देश जारी कर दिया गया है। इस योजना का उद्देश्य मात्स्यिकी क्षमता सतत, उत्तरदायी, समावेशी और सामयिक तरीके से विदोहन करना, मात्स्यिकी उत्पादन में विस्तारीकरण, सघनतापूर्वक एवं विविधीकरण के माध्यम से वृद्धि करना एवं भूमि व जल का उपजाऊ उपयोग करना, मूल्य वर्धित श्रृंखला का

प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के अन्तर्गत मछुआ समुदाय के लोग मत्स्य पालक मात्स्यिकी क्षेत्र के स्वयं सहायता समूह, सहकारी संघ तथा मात्स्यिकीय सहकारी समितियां, अनुसूचित जाति, जनजाति, महिला, दिव्यांगजन आदि लाभान्वित होंगे। इस योजना का उद्देश्य हह्य कि सबसे कमजोर व्यक्ति को लाभान्वित कराते हुए उसकी आर्थिक स्थिति मजबूत करना हह्य। सरकार की नीति हह्य कि किसानों की आय दोगुनी करना हह्य। इसी के तहत खेती किसानी के तहत मत्स्य पालन भी करके किसान, मत्स्य पालक अपनी आय बढ़ा सकते हह्यं।

आधुनिकीकरण, सुदृढ़ीकरण एवं मत्स्य निकासी के बाद के प्रबन्धन व गुणवत्ता में सुधार, मछुआरों व मत्स्य पालकों की आय को दोगुनी करना व रोजगार सृजन, कृषि के सकल मूल्य वर्धित एवं निर्यात में मात्स्यिकी गतिविधियों की हिस्सेदारी बढ़ाना, मछुआरों व मत्स्य पालकों को सामाजिक व आर्थिक जोखिम से सुरक्षा प्रदान करना, मजबूत मत्स्य प्रबन्धन और नियामक ढांचा तैयार करना है। इस योजना के माध्यम से देश का मत्स्य उत्पादन 13.75 मिलियन मीट्रिक टन से 22 मिलियन मीट्रिक टन तक ले जाने तथा 15 लाख रोजगार सृजन करने का लक्ष्य है।

भारत सरकार द्वारा वित्त पोषण पद्धति योजना के अन्तर्गत 20050 करोड़ रुपए की धनराशि के बजट का प्राविधान किया गया है जिसमें से केन्द्र पुरोनिधानित योजनाओं के लिए धनराशि 18330 करोड़ मात्राकृत की गयी है तथा केन्द्र पोषित योजनाओं के लिए धनराशि 1720 करोड़ मात्राकृत है।

केन्द्र पोषित योजनाओं में शत-प्रतिशत भारत सरकार की हिस्सेदारी है तथा केन्द्र सरकार की क्रियान्वयन संस्थाओं के माध्यम से सीधे लाभार्थीपरक व समूह आधारित योजनायें संचालित होंगी, उनमें सामान्य वर्ग के लाभार्थियों को कुल इकाई लागत का 40 प्रतिशत तथा अनुसूचित जाति, जनजाति व महिला लाभार्थियों को कुल इकाई लागत का 60 प्रतिशत केन्द्रीय सहायता अनुदान के रूप में उपलब्ध कराया जायेगा। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के अन्तर्गत मछुआ समुदाय के लोग मत्स्य पालक मात्स्यिकी क्षेत्र के स्वयं सहायता समूह, सहकारी संघ तथा मात्स्यिकीय सहकारी समितियां, अनुसूचित जाति, जनजाति, महिला, दिव्यांगजन आदि लाभान्वित होंगे। इस योजना का उद्देश्य है कि सबसे कमजोर व्यक्ति को लाभान्वित कराते हुए उसकी आर्थिक स्थिति मजबूत करना है। सरकार की नीति है कि किसानों की आय दोगुनी करना है।

इसी के तहत खेती किसानी के तहत मत्स्य पालन भी करके किसान, मत्स्य पालक अपनी आय बढ़ा सकते हैं। सरकार की आत्मनिर्भर नीति के तहत लागू की गई इस योजना से मत्स्य पालन करने वाले लोग लाभान्वित होंगे और उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

धरोहर

वीरता और त्याग का प्रतीक राष्ट्रीय समर स्मारक

संतोष देव गिरि

(लेखक उत्तर प्रदेश समाचार सेवा एवं ग्राम भारती के मिर्जापुर में संवाददाता हैं)

यदि आप दिल्ली जाते हैं तो देश के पर्यटक स्थल नई दिल्ली में इंडिया गेट के पूर्व में स्थित और सी हेक्सागन के तीन उद्यानों में निर्मित राष्ट्रीय समर स्मारक जो भारत माता की रक्षा करते हुए अपने को बलिदान करने वाले अमर शहीद सैनिकों की वीरता और साहस का जीता जागता प्रतीक है, को अवश्य देखें। शहीद सैनिकों के सम्मान में भारत सरकार द्वारा बनाये गये इस राष्ट्रीय समर स्मारक को भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 25 फरवरी 2019 को राष्ट्र की ओर से सशस्त्र सेनाओं को समर्पित किया। इस स्मारक में

भूदृश्यों की सुन्दरता और वास्तुविद की सादगी को महत्व देते हुए परिवेश की गरिमा को बरकरार रखा गया है। परिसर में मुख्य स्मारक के अतिरिक्त राष्ट्र के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार 'परमवीर चक्र' से सम्मानित शूरवीरों की आवक्ष प्रतिमाओं के लिए एक क्षेत्र भी समर्पित है। मुख्य स्मारक का डिजाइन न केवल इस तथ्य को प्रदर्शित करता है कि देश की रक्षा करते हुए कर्तव्य निर्वहन के दौरान सर्वोच्च बलिदान करने वाले सैनिक अमर हो जाते हैं, बल्कि यह भी दशार्या गया है कि एक सैनिक की आत्मा शाश्वत रहती हैं।

देश की स्वतन्त्रता के बाद से भारतीय सशस्त्र सेनाओं के 26 हजार से अधिक सह्यनिकों ने देश की सम्प्रभुता और अखण्डता की रक्षा करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया है। शहीद सैनिकों के सम्मान में बना यह राष्ट्रीय समर स्मारक सशस्त्र सेनाओं के प्रति राष्ट्र की कृतज्ञता का प्रतिनिधित्व करता है। यह स्मारक स्वतन्त्रता के बाद विभिन्न संघर्षों, युद्धों, संयुक्त राष्ट्र आपरेशन, मानवीय सहायता, आपदा राहत और बचाव जह्यसे आपरेशन में देश के सैनिकों के बलिदान का साक्षी है। यह स्मारक देश के नागरिकों में अपनत्व, उच्च नैतिक मूल्यों, बलिदान और राष्ट्र गौरव की भावना को सुदृढ़ करता है। भावी पीढ़ी के लिए यह स्मारक प्रेरणा का प्रतीक है ।राष्ट्रीय समर स्मारक में विशिष्ट वृत्त बनाये गये हैं। जिनमें पहला अमर चक्र दीर्घा है। इस दीर्घा में अमर ज्योति के साथ स्तम्भ है, जो हमेशा जलती रहती है। यह ज्योति शहीद सैनिकों की आत्मा की अमरता का प्रतीक है साथ ही यह कि राष्ट्र अपने सह्यनिकों के बलिदान को कभी नहीं भुलाएगा। दूसरी दीर्घा वीरता चक्र की है, जिसमें देश की सेनाओं द्वारा लड़ी गई 6 वीरतापूर्ण लड़ाईयों को कास्य भित्ती चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। तीसरी दीर्घा त्याग चक्र की है जिसमें वृत्ताकार समकेन्द्रीय प्रतिष्ठा दीवारें हैं जो प्राचीन युद्ध ब्यूह रचना 'चक्रव्यूह' का प्रतीक है। दीवारों में ग्रेनाइट की पट्टिकाएं लगी हैं और सर्वोच्च बलिदान देने वाले प्रत्येक सैनिक को एक ग्रेनाइट पट्टिका समर्पित है और उनके नाम स्वर्णाक्षरों में उत्कीर्ण किए गये हैं। चौथी दीर्घा रक्षक चक्र है। इसमें घने वृक्षों की पंक्ति है जो राष्ट्र की क्षेत्रीय अखण्डता की दिन-रात रक्षा करने वाले बहुत से सैनिकों का प्रतिनिधित्व करता है। देश के सैनिकों की वीरता, त्याग और शौर्य का प्रतीक यह राष्ट्रीय समर स्मारक आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा देता रहेगा। कुछ विशेष दिवसों, समय को छोड़कर यह स्मारक पर्यटकों को देखने के लिए नवम्बर से मार्च तक प्रातः 9 बजे से शाम 7:30 बजे तक एवं अप्रैल से अक्टूबर तक सुबह 9 बजे से शाम 8:30 बजे तक प्रतिदिन खुला रहता है। देश के नागरिक, पर्यटक, विदेशी पर्यटक भी देश के इस भव्य और आकर्षक समर, स्मारक का अवलोकन करते हुए देश के बलिदानी सैनिकों की गाथा का ज्ञानार्जन कर रहे हैं। **(स्रोत- सूचना एवं जनसंपर्क विभाग मीरजापुर, विंध्याचल मंडल उत्तर प्रदेश)**

देश की स्वतन्त्रता के बाद से भारतीय सशस्त्र सेनाओं के 26 हजार से अधिक सैनिकों ने देश की सम्प्रभुता और अखण्डता की रक्षा करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया है। शहीद सैनिकों के सम्मान में बना यह राष्ट्रीय समर स्मारक सशस्त्र सेनाओं के प्रति राष्ट्र की कृतज्ञता का प्रतिनिधित्व करता है।

अहिंसा महात्मा गांधी की एक व्यापक अवधारणा

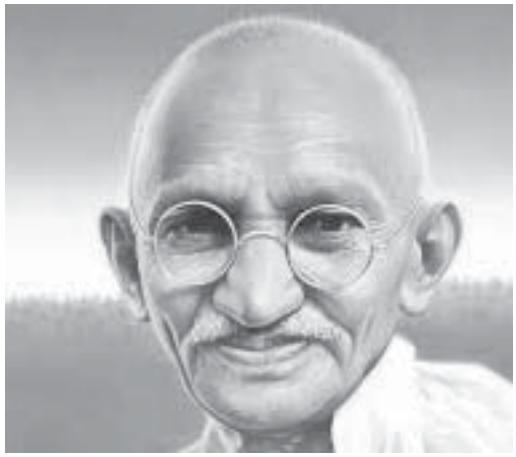

संकलित

मानव के अधिकार एवं कर्तव्य समाज में उसकी गरिमा और प्रतिष्ठा के लिए जिम्मेदार माने जाते हैं। इन्हीं अधिकारों और कर्तव्य को मद्देनजर रखते हुए विभिन्न समाज सुधारकों ने तन, मन, धन मानव अधिकारों की रक्षा में न्यौछावर कर विश्व बंधुत्व पर विशेष बल दिया जिनमें महात्मा गाँधी, राजा राममोहन राय, अब्राहम लिंकन, नेल्सन मंडेला के नाम प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

मानव अधिकारों के हक में लड़ी जाने वाली इस लड़ाई की शुरूआत हाड़-मांस के एक समान्य से दिखने वाले इंसान ने दक्षिण अफ्रीका में रेलगाड़ी में सफर के दौरान की और अपनी अतिम सांस तक इस लड़ाई को जारी रखा। आगे चलकर वही व्यक्ति जन-जन की चेतना बन महात्मा गाँधी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। समाज को बदलने के लिए गाँधी ने स्वयं को बदल दिया था। अहिंसा को उन्होंने बुनियादी जीवन का मूल्य माना। सत्य को एक अस्त्र के रूप में प्रयोग किया है जिसका वार कभी निष्फल नहीं होता।

विश्व के विभिन्न मनीषियों, समाज सुधारकों ने एक स्वर में इस बात को स्वीकार किया कि गाँधी के बिना मानवाधिकार की संकल्पना अधूरी रह जाती है। मानवाधिकार की पृष्ठभूमि गांधी की दृष्टि और दर्शन का ही परिणाम है। भारतीय समाज में अधिकार और कर्त्तव्य की अवधारणा के बीज भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही उपस्थित रहे हैं। चौदहवीं-पन्द्रहवी शताब्दी से ही इस संकल्पना का प्रस्फुरण तत्कालीन समाज में व्याप्त चिन्तन में दृष्टिगत होता है।

उसकी स्थापना मनुष्य की गरिमा और प्रतिष्ठा को कायम करने के लिए की गयी थी। सत्रहवीं शताब्दी में इसके विकास के संबंध में कुछ आशा की किरण दिखाई दी

और उन आशा किरणों ने समाज में नई क्रांति के बीज के रूप में कुछ समाज सुधारकों ने जन्म लिया और उनहोंने इस का भार अपने सबल कंधों पर लेकर विश्व में शांति और समन्वय की स्थापना के लिए एक जन आंदोलन की शुरुआत की। वैसे तो 18वीं-19वीं शताब्दी जिसे भारत के पुनःरोत्थान का काल कहा जाता है, में सांस्कृतिक चिन्तन की अवधारणा के साथ-साथ मनुष्य के अधिकार और कर्तव्यों की अवधारणा के साथ-साथ मनुष्य के अधिकार और कर्तव्य की आवधारणा को भी व्यापक जनसमर्थन मिला। इस शताब्दी में ऐसे मनीषियों, विचारकों, समाज सुधारकों और राष्ट्रभक्तों का आविर्भाव हुआ जिन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया। इनमें राजा राम मोहन राय, अब्राहम लिकंन, महात्मा गाँधी, नेल्सन मंडेला एंव (18-19वीं शताब्दी में) के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

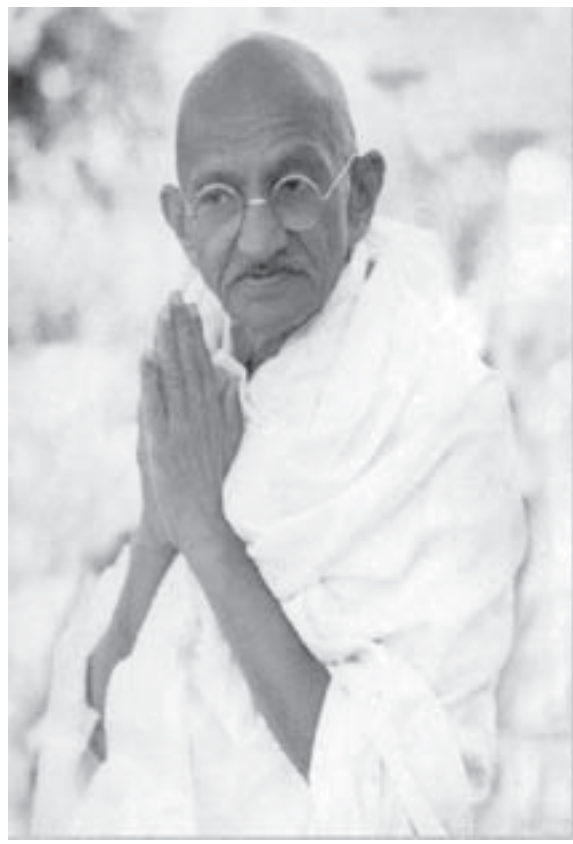

इन सभी नें कर्मप्रधान विश्व की संरचना करने में महत्वपूर्ण अवदान किया है। इन लोगों ने जगत को विश्व बन्धुत्व का ऐसा पाठ पढ़ाया जो आज भी उतना ही प्रासंगिक और समीचीन है।

उपयुर्क्त पृष्ठभूमि में गांधीजी का नाम सबसे महत्वपूर्ण है। गाँधी जी के बारे में अल्बर्ट आइन्स्टाइन ने कहा था कि आने वाली पीढियां इस बात पर विश्वास ही नहीं करेंगी कि हाड-मांस का ऐसा कोई इंसान इस धरती पर पहले कभी हुआ था।

मानवाधिकार की संकल्पना बिना गाँधी के अधूरी है, क्योंकि मानवाधिकारों की सांस्कृतिक और वैचारिक पृष्ठभूमि गांधी की दृष्टि और उसके दर्शन पर ही आधारित है। अहिंसा के पुजारी गांधी जी ने सभी विचारों के बीच एक ऐसा समन्वय स्थापित किया जहाँ से विश्व को व्यक्ति के मानवाधिकारों के लिए एक दिशा मिली।

गाँधी जी की मानवाधिकारों के लिए लड़ाई तब शुरु हुई जब दक्षिण अफ्रीका में उनके पास प्रथम श्रेणी का टिकट था, और उन्हें रेलगाड़ी में सफर नहीं करने दिया गया एवं उसके बाहर फेंक दिया गया।

तब उन्होंने वहाँ बसे भारतीय समुदाय के लोगों के मानवाधिकारों के बारे में जाच पड़ताल की। उनहोंने वहाँ बसे भारतीय समुदाय के लोगों की मदद की ताकि वे भेदभाव के शिकार न हो

सकें। एक सहमे हुए भारतीय वकील ने दबे और बेसहारा तथा अधिकारहीन लोगों को उनके मानव अधिकार दिलाने में महारत हासिल कर ली।

उन्होंने प्रस्तुतिकरण में आत्मविश्वास हासिल किया एवं वे सर्वोच्च नयायालय में वकालत करने लगे। आने वाले कई हफ्तों तक उनके खिलाफ हिंसात्मक प्रदर्शन एवं प्रतिरोध हुआ।

जब 1889 में बोर युद्ध हुआ तो उनहोंने करीब हजार लोगों का दस्ता तैयार किया जो युद्धभूमि में जाकर घायलों एंव अपंगों की देखभाल व बचाव का कार्य करता। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की मदद से लगभग एक लाख भारतियों को, जो दक्षिण अफ्रीका में रहते थे, समान अधिकार दिलाने की उन्होंने पैरवी की। उन्होंने भारतियों से परमिट के नये नियम को विरोध करने को कहा। सत्याग्रह व अहिंसात्मक असहयोग आंदोलन उनके प्रमुख व शक्तिशाली हथियार बने। गांधी का समन्वयवादी सिद्धांत मनुष्य के विवेक की धुरी था और सत्याग्रह और अहिंसा की बुनियाद पर कायम था। गांधी ने अहिंसा के जिस सिद्धांत का प्रतिपादन किया उसकी कसौटी विश्व के सभी धर्मग्रन्थों का मूल थी। इस सन्दर्भ में बात को और अधिक प्रमाणित करने के लिए गांधीजी के कुछ उद्धरण प्रस्तुत हैं। गाँधी जी लिखते हैं अहिंसा व्यापक वस्तु है। हिंसा की होली को लपेट में आया हम पामर प्राणी है। मनुष्य क्षणभर ही बाह्य हिंसा के बिना नहीं जी सकता। खाते-पीते, उठते-बैठते सब कर्मों से, इच्छा से हो या अनिच्छा से कुछ न कुछ हिंसा तो वे करता ही रहता है।

उस हिंसा से निकलने का उसका महाप्रयास हो, उसकी भावना में अनुकम्पा हो। गांधी जी ने कभी ये नहीं कहा कि राज्य की हिंसा निन्दीय है और क्रांतिकारियों की हिंसा स्वीकार्य है। इस मान्यता के लिए उन्होंने अपने जीवन में काफी लानत मलामत भी सही। इसका तात्पर्य यह है कि गांधीजी की करनी और कथनी में कोई भेद नहीं था। वे जिसका विरोध करते थे उस पर मजबूती से खड़े दिखते थे। उनका जीवन प्राण जाए पर वचन नहीं जाए के सिद्धांत पर आधारित था।

सत्याग्रह
जिसने
गांधी को महात्मा बनाया

शिवदत्त दूबे

(लेखक उत्तर प्रदेश समाचार सेवा के देवरिया जिला संवाददाता हैं)

'महात्मा गांधी उपाख्य मोहनदास करमचंद गांधी' का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के काठियावाड़ में पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था। जिस परिवार में गांधीजी का जन्म हुआ था वह बहुत ही धर्मपरायण परिवार था। महात्मा गांधी के पिता करमचंद उत्तमचंद गांधी पोरबंदर राज्य के दीवान थे प्रायः अशिक्षित थे किंतु उनके सदाचरण की बड़ी धाक थी। गांधीजी की माता पुतलीबाई भी अत्यंत धार्मिक महिला थीं। विद्यालय में अध्ययन के दिनों से ही गांधीजी समय के बड़े पाबंद थे तथा शिक्षकों के आज्ञाकारी थे। स्कूल में वह साधारण विद्यार्थी ही सिद्ध हुए।

गांधी जी का विवाह कस्तूरबा गांधी जी से हुआ था। विवाह से गांधीजी के चार पुत्र हुए - हरिलाल, मणिलाल, देवदास, रामदास। गांधीजी बैरिस्टर बनने सन 1888 ई० में इंग्लैंड गए। सन 1891 में गांधी जी बैरिस्टर की डिग्री प्राप्त कर भारत लौट आए। सन् 1893 में गांधीजी एक धनाड्य गुजराती मुसलमान का मुकदमा लड़ने के लिए दक्षिण अफ्रीका गए। दक्षिण अफ्रीका गांधी जी लगभग 21 वर्ष तक रहे। इस दौरान वहां पर भारतीयों के साथ हो रहे रंगभेद का डटकर मुकाबला किया। सन 1893 से 1914 तक दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी का निवास उनके जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना है। इस दौरान गांधी जी अपने प्रति तथा संसार के प्रति अपने कर्तव्य को पहचाना।

गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में काउंट ली टॉलस्टॉय से प्रेरित होकर टॉलस्टॉय फार्म भी बनवाया। इसके अलावा उनका एक प्रमुख आश्रम फीनिक्स आश्रम भी था। गांधी जी ने सत्याग्रह का प्रथम प्रयोग दक्षिण अफ्रीका में 1906 ईस्वी को किया। जेल जाने का प्रथम अनुभव गांधीजी को 1908 ई० में प्राप्त हुआ। गांधीजी के अनुशासन का आधारभूत नियम अहिंसा का पालन था। उन्होंने अपने अनुयायियों से कहा, 'अंग्रेज चाहते हैं कि हमारी लड़ाई मशीन गन के स्तर

पर चले, उनके पास शस्त्र हैं हमारे पास नहीं है। उन्हें परास्त करने का हमारे पास एक ही उपाय है और वह है कि हम इस लड़ाई को ऐसे शस्त्रों से लड़े जो उनके पास नहीं है।' गांधी जी ने अपनी लड़ाई के लिए जिस शस्त्र का अविष्कार किया वह था- 'आत्मा की तलवार।'

गांधी जी के जीवन का दूसरा चरण उनके जनवरी 1915 में भारत आगमन से उनकी हत्या 30 जनवरी 1948 तक माना जा सकता है। जीवन के इस चरण में गांधी जी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया। गांधी जी ने भारत लौटते समय हिंद स्वराज की रचना कर डाली। गांधी जी के राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले थे। भारत में गांधीजी को पंडित जवाहरलाल नेहरु तथा सरदार बल्लभ भाई पटेल के रूप में दो योग्य शिष्यों की प्राप्ति हुई। भारत में आते ही गांधीजी ने साबरमती नदी के किनारे साबरमती आश्रम की स्थापना की तथा कोचरब में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की। सन् 1917 में बिहार के एक किसान नेता राजकुमार शुक्ल के आग्रह पर गांधीजी चंपारण पहुंचे। चंपारण के किसान अंग्रेजों के द्वारा जबरन नील उत्पादन कराने हेतु

राष्ट्पिता महात्मा गांधी की जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं

माधव फाउण्डेशन, सीतापुर

डा0 मधुलता — **अध्यक्ष**

चन्द्रेश कुमार — **कोषाध्यक्ष**

शुरु किए गए तिनकठिया पद्धति से त्रस्त थे। गांधी जी ने सत्याग्रह कर उन्हें इस पद्धति से मुक्त कराया। गांधी जी का भारत में अंग्रेजों से प्रथम टकराव यहीं होता है। चंपारण सत्याग्रह प्रथम वास्तविक किसान सत्याग्रह था।

अहमदाबाद कपड़ा मिल मजदूर आंदोलन में सन 1918 में महात्मा गांधी द्वारा प्रथम भूख हड़ताल की गई। अहमदाबाद के मिल मजदूर वेतन में वृद्धि की मांग कर रहे थे। खेड़ा में सरदार बल्लभभाई पटेल जी द्वारा किसान आंदोलन चलाया जा रहा था जो कि प्रथम पूर्ण किसान सत्याग्रह था। इसमें भी गांधी जी सरदार बल्लभ भाई पटेल के आमंत्रण पर सम्मिलित हुए और किसानों को न्याय दिलवाया।

सरदार बल्लभ भाई पटेल ने यहां नारा दिया था- 'कर मत दो' पटेल को यहीं पर किसानों द्वारा 'सरदार' की उपाधि मिली। गांधीजी ने खिलाफत आंदोलन (सन् 1919) में भी भाग लिया था। खिलाफत आंदोलन सर्वप्रथम असहयोग आंदोलन की अभिव्यक्ति थी। सन् 1920 में गांधी जी ने असहयोग आंदोलन का आह्वान किया परंतु चौरी चौरा में हुए अग्निकांड से गांधीजी द्रवित हो असहयोग आंदोलन को चरम पर ही छोड़ दिया। गांधी जी सन् 1924 ई० में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बेलगांव (कर्नाटक) अधिवेशन में अध्यक्ष चुने गए।सविनय अवज्ञा आंदोलन (दांडी मार्च) का आह्वान गांधीजी ने 1930 में किया। इसे नमक सत्याग्रह के नाम से भी जाना जाता है। सन् 1940 में गांधी जी व्यक्तिगत सत्याग्रह का आह्वान किया। जिसे दिल्ली चलो आंदोलन के नाम से भी जाना जाता है। गांधीजी का अंतिम राष्ट्रीय राजनितिक आंदोलन भारत छोड़ो आंदोलन या अगस्त क्रांति था। करो या मरो का नारा देकर गांधी जी ने भारत को एक सूत्र में बांधकर अंग्रेजों के शासन को उखाड़ फेंकने में महती भूमिका निभाई थी।

गांधीजी ने केवल भारत की स्वतंत्रता हेतु ही नहीं आवाज उठाई, बल्कि वह एक सामाजिक नेता भी थे उन्होंने समाज में प्रचलित अस्पृश्यता विरोध में भी अपनी आवाज बुलंद की। गांधी जी ने भारत में प्रमुख रूप से साबरमती आश्रम, सत्याग्रह आश्रम, अनासक्ति आश्रम तथा सेवाग्राम आश्रम की स्थापना की।

इन्हीं आंदोलनों में कुशल नेतृत्व के कारण गांधीजी भारतीय जनता के सर्वमान्य नेता हो गए। गांधीजी किसी क्षेत्र विशेष में सीमित ना रह कर भारत भर में यात्रा कर भारतीय जनमानस को अंग्रेजी शासन के प्रति जागरूक करने का एवं उनका नेतृत्व करने का साहस किया। गांधी जी व्यवहारिक आदर्शवादी थे। उनका आदर्शवाद केवल शब्दों में ही नहीं बल्कि व्यवहार में भी दिखता था। गांधीजी ने केवल भारत की स्वतंत्रता हेतु ही नहीं आवाज उठाई ,बल्कि वह एक सामाजिक नेता भी थे उन्होंने समाज में प्रचलित अस्पृश्यता विरोध में भी अपनी आवाज बुलंद की। गांधी जी ने भारत में प्रमुख रूप से साबरमती आश्रम, सत्याग्रह आश्रम, अनासक्ति आश्रम तथा सेवाग्राम आश्रम की स्थापना की। गांधीजी ने प्रमुख रूप से सत्य के साथ मेरे प्रयोग (आत्मकथा), इंडिया ऑफ माय ड्रीम्स, अनासक्ति योग, हिंद स्वराज, गीता माता, सप्त महाव्रत इत्यादि पुस्तकों का लेखन कार्य किया तथा द ग्रीन पेम्पलेट, इंडियन ओपिनियन, यंग इंडिया तथा हरिजन नामक समाचार पत्रों का कुशल संपादन भी किया।

मानव से महात्मा की यात्रा

■ डा. अपूर्वा अवस्थी

(लेखिका - असिस्टेंट प्रोफेसर
नवयुग कन्या महाविद्यालय
राजेन्द्र नगर लखनऊ)

गांधी अपने युग की भाषा,
गांधी अपने युग का पानी।
सदियों तक जो खत्म ना होवे,
गांधी ऐसी अमर कहानी।।

किसी कवि की ये पंक्तियाँ महात्मा गांधी के जीवन और सत्य को उद्घाटित करती हैं । गांधी जी के जीवन का प्रारंभ एक साधारण व्यक्ति मोहनदास से प्रारंभ होकर महात्मा तक पहुंचना एक बहुत बड़ी बात है। एक व्यक्ति होने के कारण स्वाभाविक दुर्बलता होने के बाद अपने को सुधारना और उन दुर्बलताओं का अपनी आत्मकथा में लिखना ही गांधी से महात्मा होने की पहली सीढी है। किसी भी व्यक्ति के जीवन में नियम और संयम तब तक नहीं आता जब तक वह दृढ़ निश्चयी ना हो। गांधी जी ने नियम और संयम को ही अपना साथी बना लिया और फिर भय रहित होकर कर्मक्षेत्र में उतर गये। यही कारण था कि उनकी एक आवाज पर जनता उनके साथ चल पड़ी। दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल, साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल। गीत को गाते समय मन में यह विचार तो उठता ही है ऐसी लड़ाई वो भी अंग्रेजों के खिलाफ जब

गांधी जी अपने साथ एक पत्थर रखते थे यद्यपि उस पत्थर का कोई विशेष महत्व नहीं था। एक बार मनु उसे रखना भूल गयी , करीब इक्कीस किलोमीटर आने के बाद गांधी जी ने मनु से पूंछा कि वो पत्थर कहाँ है,, मनु ने कहा मैं भूल गयी उसे रखना। गांधी जी ने उसे तुरंत वापस भेजा लाने के लिए यद्यपि मनु को क्रोध भी आया पर गांधी जी ने उनसे कहा यदि जीवन में बड़े कार्य करने हैं तो छोटी छोटी बातों को भूलना नहीं है।

भारतीय जनता उनके अत्याचारों से त्रस्त थी, गांधी जी अहिंसा की बात करते थे। अहिंसा और हिंसा बहुत छोटे से शब्द हैं पर हिंसा होने के बाद उसके दुष्परिणाम का अंदाजा गांधी जी को था। महात्मा बुद्ध भी इसी हिंसा से विचलित हुए थे और महाभारत में अर्जुन भी। गांधी जी जानते थे कि हिंसा से कुछ भी हासिल नहीं होगा । उन्होंने अंग्रेजों की लाठियां खाईं पर अपनी आवाज को ऊंचा रखा शरीर को कष्ट मिला पर मन मजबूत होता गया। हिंसा पर अहिंसा की विजय हुयी। जीवन में नियम को कठोर बनाने में गांधी जी ने अपने साथ अन्य लोगों को भी नियम का महत्व समझाया। ऐसी ही एक घटना है कि गांधी जी अपने साथ एक पत्थर रखते थे । यद्यपि उस पत्थर का कोई विशेष महत्व नहीं था। एक बार मनु उसे रखना भूल गयी करीब इक्कीस किलोमीटर आने के बाद गांधी जी ने मनु से पूंछा कि वो पत्थर कहाँ है, मनु ने कहा मैं भूल गयी उसे रखना। गांधी जी ने उसे तुरंत वापस भेजा लाने के लिए ,यद्यपि मनु को क्रोध भी आया पर गांधी जी ने उनसे कहा यदि जीवन में बड़े कार्य करने हैं तो छोटी छोटी बातों को भूलना नहीं है ।एक और अहिंसा का उदाहरण गांधी जी के जीवन में देखने को मिलता है जब विदेश में शाकाहारी भोजन खाने की बात आयी तो किसी व्यक्ति के दूध के लिए मांसाहारी कहने पर उन्होंने दूध पीना भी छोड़ दिया था।

दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद जब एक किसान ने चंपारण से पत्र लिख कर उनसे मदद मांगी और नील की खेती के विषय में बताया तो गांधी जी वहाँ पहुंचे और जाकर वहाँ आंदोलन किया। अंग्रेज अफसर ने कहा भी कि आप जमानत करा लो पर गांधी जी ने जेल जाना पसंद किया और उन किसानों को मुक्ति दिलाई।

अहिंसा का उदाहरण गांधी जी के जीवन में देखने को मिलता हैजब विदेश में शाकाहारी भोजन खाने की बात आयी तो किसी व्यक्ति के दूध के लिए मांसाहारी कहने पर उन्होंने दूध पीना भी छोड़ दिया था।
दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बादजब एक किसान ने चंपारण से पत्र लिख कर उनसे मदद मांगी और नील की खेती के विषय में बताया तो गांधी जी वहाँ पहुंचे और जाकर वहाँ आंदोलन किया। अंग्रेज अफसर ने कहा भी कि आप जमानत करा लो पर गांधी जी ने जेल जाना पसंद किया और उन किसानों को मुक्ति दिलाई।

गांधी जी ने अपने जीवन में सत्य और अहिंसा को बहुत महत्व दिया और इसी शक्ति पर भारतीय जनता को गुलामी से छुटकारा दिलाया।

आज भी हम गांधी जी के सत्य और अहिंसा को यदि अपना लें तो समाज में अपराध बंद हो सकता है। मन पर संयम, नियम सत्य और अहिंसा ये सभी वे गुण हैं जो किसी भी समाज और व्यक्ति को मानव से महात्मा बनाने में सहायक हैं। गांधी ने जो सोंचा वही किया और जो किया वही जीवन में जिया भी, यही मानव से महात्मा की यात्रा थी।

खुद वो बदलाव बनिये जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं: महात्मा गांधी

■ जयंत कुमार मिश्र

(लेखक उत्तर प्रदेश समाचार सेवा के बस्ती मंडल प्रभारी तथा मान्यता प्राप्त संवाददाता हैं)

महात्मा गांधी को ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नेता और राष्ट्रपिता माना जाता है। इनका पूरा नाम मोहनदास करमचन्द गांधी था। गांधी जी का जन्म 02 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ। माता का न ाम पुतलीबाई था जोकि करमचन्द गांधी की चौथी पत्नी थीं।

सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय,अपरिग्रह, शरीर श्रम,आस्वाद, अभय,सर्वधर्म समानता,स्वदेशी और समावेशी समाज निर्माण की कल्पना ही उनका आदर्श रहा है। गांधी के आदर्श विचार उनके निजी तथा आदर्श जीवन तक ही सीमित नहीं रहे। उन विचारों को उन्होंने आजादी की लड़ाई से लेकर जीवन के विविध पक्षों में भी आजमाया।

महात्मा गांधी ने कहा-खुद वो बदलाव बनिये जो आप दूसरों में देखना चाहते हैं। आपको मानवता में विश्वास नहीं खोना चाहिए। खुद को खोजने का सबसे अच्छा तरीका है, खुद को दूसरों की सेवा में खो दो। गांधी जी ज्ञान आधारित शिक्षा के स्थान पर आचरण आधारित शिक्षा के समर्थक थे। वे शिक्षा को मानव के सर्वांगीण विकास का माध्यम मानते थे। गांधी जी का यह मानना भी था कि व्यक्ति अपनी मातृभाषा में शिक्षा को अधिक रुचि तथा सहजता से ग्रहण कर सकता है।

किसी से भी पूछने पर यही सुनने को मिलता है कि गांधी जी को सत्याग्रह के लिए जाना जाता है। दरअसल गांधी जी के सत्याग्रह का व्यापक अर्थ है। अन्याय, अत्याचार. उत्पीड़न,दमन करने वाले, जनद्रोही, भ्रष्ट और शोषण व्यवस्थाओं से असहयोग तथा समाज में शुभ चिंतन तथा सहयोग करने वाले लोगों के बीच समन्वय और सहकार।

जहां तक आज के समय में इसकी प्रासंगिकता का सवाल है तो आज जरूरत है कि हम अपने ढंग से ईमानदारी के साथ सत्याग्रह का सम्यक प्रयोग करें। मूल बात यह है कि हम सत्य पर अडिग हों। साधन शुद्धि पर हमारा भरोसा हो और व्यापक लोकहित पर हमारा बराबर ध्यान लगा रहे। वास्तव में सत्याग्रह होना चाहिए समाज को बेहतर बनाने के लिए, निरंकुश राजसत्ता पर जनता प्रभावी अंकुश के लिए, नया समाज गढ़ने के लिए, जड़ीभूत मूल्यों और ढांचे के ध्वंस के लिए, और स्वयं अपने भीतर के कलुषों को भगाने के लिए।

हमेशा यही होता है कि हम अपने महापुरुषों के जन्म दिन और पुण्यतिथियों पर बड़ी बड़ी बातें करते हैं। उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लेते हैं। लेकिन अगली सुबह हम फिर उस ज़ड़ समाज का सक्रिय अंग बन जाते हैं। अब वक्त आ गया है कि हम अपनी इस परिपाटी को छोड़ें और इसके हमें गांधी जयंती से अच्छा मौका नहीं मिलेगा। क्योंकि जितनी सामाजिकता और नैतिकबोध का सजीव और निर्मल का चित्रण हमें उनकी छवि से मिलेगा उतना किसी अन्य से नहीं। आज भूमण्डलीकरण का दौर है। राज्य उपनिवेशवाद का स्थान बहुराष्ट्रीय उपनिवेशवाद ने ले रखा है।

गांधी जी राज्य उपनिवेश से लड़े थे। हमें बहुराष्ट्रीय उपनिवेशवाद से लडना है। क्योंकि दैत्याकार बहुराष्ट्रीय कंपनियों और उनके साम्राज्य विस्तार को बढ़ावा देने वाले विश्व बैंक, अन्तरराष्ट्रीय मुद्रो कोष और विश्व व्यापार संगठन की नापाक तिकड़ी का शिकंजा हम पर कसता जा रहा है।

दरअसल गांधी के अनुसार विकास की बुनियादी शर्त थी कि हम अन्दर से सबल बनें, आंतरिक संसाधनों पर अपनी ज्यादा निर्भरता हो, निर्णय लेने का अधिकार हमारे हाथों में हो। हमारी सारी व्यवस्थाएं स्वतंत्र हों। एक और बात साफ कर देना बेहद जरूरी है कि गांधी जी बाहर की चीजों का एकदम निषेध नहीं करते थे बल्कि वे इसके न्यूनातिन्यून आवश्यकता के पक्षधर हैं। क्योंकि उनका मानना था कि बाहरी शक्तियों के सीमा से अधिक होने पर वे हम पर हावी होती जाएंगीं। परिणाम स्वरूप हमारी स्वतंत्रता कम होती जाएगी। कुछ विचारकों का मानना है कि गांधी विचार का अनुसरण करके हम दुनिया से अलग थलग पड़ जाएंगे। जबकि परिदृश्य एकदम अलग है।

वास्तव में गांधी जी वैश्विक महासंघ की कल्पना में सभी राष्ट्रों का स्वतंत्र अस्तित्व है। उनके अनुसार किसी भी राष्ट्र को अन्य राष्ट्र के शोषण की आजादी नहीं रहेगी। न ही कोई राष्ट्र इतना मोहताज या लाचार होगा या उसकी संप्रभुता का अपहरण कर सके। दरअसल गांधी का विचार था कि चीजों का लाभ उठा सकें, लेकिन साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हमारे दरवाजे इतने न खुल जाएं कि बाहर का भीषण अंधड़-तूफान हमारे अंदर दाखिल होकर हमारे परखचे उड़ा दे।

गांधी जी के अनुसार हमें बाहर की खुली ताजी हवा चाहिए। बाहर की सड़ांध नहीं कि जिसके रोगाणु हम पर हमला कर दें। महात्मा गांधी के शब्दों में -कुछ ऐसा जीवन जियो कि तुम कल मरने वाले हो, कुछ ऐसा सीखो कि तुम हमेशा के लिए जीने वाले हो। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी इन्हीं सिद्धान्तों पर जीवन व्यतीत करते हुए भारत की आजादी के लिए ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ लड़ते रहे।

कमजोर कभी माफी नहीं मांगते, क्षमा करना तो ताकतवर व्यक्ति की विशेषता है-महात्मा गांधी

गांधी जी के वचनों का समाज पर गहरा प्रभाव आज भी देखा जा सकता है। वह मानवीय शरीर में जन्मे पुण्य आत्मा थे। जिन्होंने भारत को एकता के डोर में बांधा और समाज में व्याप्त जातिवाद जैसी कुरीति का नाश किया।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयंती पर
मिर्जापुर ब्लाक के समस्त नागरिकों को

हार्दिक शुभकामनाएं

बलवंत यादव
ब्लाक प्रमुख, मिर्जापुर, जिला आज़मगढ़

सहकारी क्रय विक्रय समिति लिमिटेड
पुवायां, शाहजहाँपुर

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयंती पर
हार्दिक शुभकामनाएं

श्रीमती सरला देवी
उपाध्यक्ष

ओमकार यादव
प्रभारी सचिव

संजीव बंसल
अध्यक्ष
बड़ा गाँव, शाहजहाँपुर

सदस्यगण : सुनीता सिंह, सत्यप्रकाश शुक्ल, उमेश चन्द्र गुप्ता, सुधीर कुमार मिश्र, दिनेश चन्द्र अवस्थी, करुणा शंकर, गजेन्द्र पाल सिंह, कुमार गौरव, खरगाई, श्रीमती आरती देवी, दसवंत सिंह एवं सर्वजीत वर्मा

सत्यानन्द हास्पिटल प्रा.लि.
24 घंटे पैथोलाजी/हारमोन्स जांच प्रतिदिन

डाक्टर्स पैनल

सत्यानन्द अल्ट्रासाउण्ड

डा.सत्यप्रकाश मिश्र
मो. 9695492222

निकट वृंदावन गार्डन, अजीजगंज, शाहजहांपुर
ATLS एम्बुलेंस(वेंटीलेटर युक्त एम्बुलेंस) सत्यानन्द डायग्नोस्टिक लैब

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयंती पर

हार्दिक शुभकामनाएं

रामेश्वर सिंह
ग्राम प्रधान, खोड़ाडीह, जिला मिर्जापुर

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयंती पर

हार्दिक शुभकामनाएं

रमेश चन्द्र
अपर जिलाधिकारी, वित्त एवं राजस्व, जिला बस्ती

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयंती पर

हार्दिक शुभकामनाएं

कौशलेन्द्र गिरी
वरिष्ठ पत्रकार, जिला संवाददाता
उ.प्र. समाचार सेवा एवं ग्राम भारती
केराकत, जिला जौनपुर

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयंती पर

हार्दिक शुभकामनाएं

ASHA GROUP
of Companies

R.K. Pandey
Chairman

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयंती पर जनपदवासियों को

हार्दिक शुभकामनाएं

मंडल अध्यक्ष, वित्त विहीन स्कूल प्रबंधक एसोसिएशन, मुरादाबाद
प्रबंधक, पुष्पा सारस्वत स्मृति इंटर कॉलेज, मंगुपुरा
सनातन धर्म माध्यमिक संस्कृत विद्यालय
रेलवे स्टेशन रोड, गजरौला जिला अमरोहा (उ.प्र.)
पिनकोड- 244235 मोबाइल- 9412727750

बसंत सारस्वत
प्रबन्धक

नगर पंचायत खुदागंज, शाहजहाँपुर

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150 वीं जयंती वर्ष पूर्ण होने पर नगरवासियों को

हार्दिक शुभकामनाएं

अर्पित करती हैं।

स्वच्छता हमारा मिशन
कोविड-19 को हराने के लिये
घर पर ही रहें-सुरक्षित रहें
बाहर निकलने पर मास्क का
प्रयोग अवश्य करें

सुधीर सिंह

अनुज कुमार रावत

सुधा सुधीर सिंह

जिला आबकारी विभाग, देवरिया

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयंती पर
जनपद वासियों को

हार्दिक शुभकामनाएं

अश्विनी कुमार
जिला आबकारी अधिकारी

अमित किशोर
जिलाधिकारी

कार्यालय, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, बस्ती

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयंती पर

हार्दिक शुभकामनाएं

हेमराज मीणा (आई.पी.एस.)
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, बस्ती

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयंती पर

हार्दिक शुभकामनाएं

सलिल कुमार मिश्र, वरिष्ठ पत्रकार
प्रदेश मंत्री, उ.प्र. जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन (उपजा)
एवं
संपादक, निदामत साप्ताहिक, उन्नाव

मॉडर्न प्रिंटर्स, लखनऊ फोन : 0522-4017686